पथ हेरथि राधा



श्री शैलेन्द्र मोहन झा

पथ हेरथि राधा

[ललित-निबन्ध-संग्रह]

डा० श्री शैलेन्द्रमोहन झा

चतुर्थ संस्करण :
सितम्बर १९७२

मूल्य : १.६५

प्रकाशक :
विद्यापति-प्रकाशन, लहेरियासराय

प्राप्तिस्थान :
ग्रन्थालय, दरभंगा

मुद्रक :
पंचायत प्रेस, लहेरियासराय

संकेत

पथ हेरथि राधा !

'पथ हेरथि राधा'क कल्पनासँ राधाक अभिसारिका रूप ध्यानमे आबि जाइछ जखन ओ कदमतर ठाढ़ि अपन मुरारिक लेल प्रतीक्षा-निरत रहैत छलीह। यमुनाक कछेर मे ठाढ़ि अनुरागिनी राधा ! रहि-रहि कऽ कृष्णक मुरली-ध्वनि कानमे गुंजि जाइत छलन्हि, चकित हरिणी जकाँ ओ चारू भर तकैत छलीह परन्तु कृष्ण कतहु देखि नहि पड़ैत छलथिन्ह और विस्मित-विमुग्ध राधाक ई रूप सम्मुख बहैत यमुना-जलमे प्रतिबिम्बित भऽ उठैत छल।

एहि पृष्ठभूमि मे प्रस्तुत पुस्तकक प्रसंग जखन सोचैत छी त लगैत अछि जे हमर ई रचना सभ यमुनाक धार हो और एहि अबाधित-अनाहत धारामे राधाक मुग्ध-विभोर रूप-छवि प्रतिबिम्बित भऽ रहल हो। ओ प्रतिबिम्ब 'पुनर्नवा'क 'कमला'क हो, ताज दर्शन'क 'मुमताज'क हो अथवा 'पथ हेरथि राधा'क 'यासमिन'क हो-सभ राधेक रूप थिक; एक राधा अनेक

रूप ! कोनो प्रगल्भा, कोनो भावमयी, कोनो अनुरागिनी त कोनो वियोगिनी राधाक।

इयह कारण अछि जे प्रस्तुत संकलन केँ भारतीय काव्य-साहित्यक अमर स्पन्दन ओ रस-रोमांसक रूप-प्रतिमा राधाक नामसँ युक्त करबामे कोनो तारतम्य नहि भेल।

'पथ हेरथि राधा' मे संकलित रचना सभ निबन्ध थीक, जकरा साहित्यक इतिहासमे व्यक्तिगत निबन्ध (Personal Essay) कहल जाइत अछि। व्यक्तिगत निबन्धक परिभाषा जँ एक दिश 'A loose sally of mind' कहि क देल जाइछ त दोसर दिश एकरा 'Lyric in prose' सेहो कहल गेलैक अछि। अर्थात् आत्मनिष्ठता एहि तरहक निबन्धक प्रधान गुण बुझल जाइछ। परन्तु व्यक्तिगत निबन्ध ने त 'संस्मरण' थीक ने 'जीवनी'। वस्तुतः अपन विषयगत सुकुमारता एवं अभिव्यक्तिक स्वच्छन्दताक कारणेँ निबन्ध, गद्य मे रचित होइतहुँ गीतक आनन्द दैत अछि। ओना तऽ हमर धारणा अछि जे प्रस्तुत संग्रहक निबन्धक माध्यम सँ पाठक लोकनि केँ कहातीक वस्तु-आकर्षण ओ कविताक भाव-उच्छ्वास—दुनूक समन्वित आस्वाद प्राप्त हैतन्हि। एही लालित्यक कारणेँ एहि संग्रह

कें व्यक्तिगत निबन्धक संग्रह नहि कहि, ललित निबन्ध संग्रह कहि परिचय देल अछि। एहि प्रकारक निबन्धक मैथिलीमे ई प्रथमे संग्रह थीक।

संकलित अधिकांश रचना पूर्वहि कोनो ने कोनो पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित भऽ चुकल अछि। वस्तुतः सम्पादक-बन्धु लोकनिक आग्रहे एकर रचनाक प्रेरणा बनल। आब कतिपय मित्र लोकनिक अनुरोधसँ एकरा एकत्र प्रकाशित कराओल जा रहल अछि।

एहि ग्रन्थक प्रकाशनमे बन्धुवर श्रीनवीनचन्द्र मिश्र, श्रीरामदेव झा ओ श्रीरमानाथ मिश्र 'मिहिर' सँ जे सहयोग भेटल अछि ताहि लेल आभारी छियैन्ह।

—लेखक

क्रम



पथ हेरथि राधा

पुनर्नवा

'ब्यालजाक' एक स्थान पर कहने छथि जे संसारमे सबसँ सुन्दर तीन वस्तु अछि—पालयुक्त गतिशील नाव, सरपट दौड़ैत घोड़ा तथा नृत्यरत नारी। एहि तीनूमे निस्संदेह अतीव आकर्षण छैक, तँ की एकरहि सौन्दर्यक सीमा-रेखा मानि लेल जाय ?

सौन्दर्यक अमित भण्डारमे पहुँचि जेना हम ओकर नवीन मूल्यांकन करबा लेल बाध्य भऽ गेल छी। एहि स्थान धरि पहुँचबामे अरण्य एवं शैल प्रान्तर केँ जे पार करऽ पड़ल हो, मुदा एतुक्का नयन-सुभग रूप देखि मार्ग क्लान्ति-जन्य दुःख केँ सर्वथा बिसरि गेलहुँ अछि। प्रकृतिक एहि रूप-दर्शन मे ई सब सोचबे किएक करितहुँ! जहाँधरि दृष्टि जाइत अछि, सौन्दर्य - सौन्दर्य छैक—आ' हम चिर-उत्कण्ठित जकाँ चारू दिस निहारि रहल छी। लगैत अछि जे विद्यापतिक राधा जकाँ 'जनम अवधि' निहारलोउत्तर 'नयन तिरपित' नहि हैत।

एहि प्रकृति-दर्शनक बीच एक नव सुषमा विशेष आकर्षित कयल अछि। चीड़ ओ फरहदक वन हमरा प्रभावित कयलक अछि, कलकल निनाद सँ बहैत सरिता ध्यान आकर्षित कयलक अछि, पहाड़सँ खसैत स्फटिक सदृश पारदर्शी झरनाक जलराशिकेँ देखि मुग्ध भेलहुँ अछि, अरण्यक मनोरम हरीतिमा देखलहुँ अछि; परन्तु एतऽ आबि जे नव वस्तु देखलहुँ ओ अछि हिम-सुषमा। एतऽ आबऽ सँ पूर्व प्रकृति-सुन्दरीक हिम-मण्डित गात नहि देखने रही। खिलनमार्गक मैदानमे बैसि चारू भरक प्राकृतिक सुषमा प्रत्यक्ष भऽ उठल; परन्तु रहि-रहि कऽ हमरा हिमानीक दिव्यता आकर्षित कऽ लैत अछि। स्वच्छ निर्मल कान्तियुक्त ई अद्भुत शोभादायक हिमपुञ्ज ककरा नहि नीक लगतैक?

एक दिस अछि 'फ्रोजेनलेक'—बर्फक जमल झील। निकटमे अछि 'सन साइन पीक' जे सूर्यक किरणसँ स्नात भऽ औरो देदीप्यमान भऽ उठैत अछि आ' दूर-सूदूर अछि नंगा-पर्वत जे स्वेत वस्त्र ओढ़ने तपस्या-निरत कोनो जटाधारी ऋषि सदृश प्रतीत होइत अछि।

महाकवि कालिदास कैलाश केँ कर्पूरगौर भगवान् शङ्करक पुञ्जीभूत स्मित-उज्ज्वल अट्टहासक तुल्य कहने

छथि। महाश्वेत महामहोच्च धवल गिरि कैलास! वस्तुतः कविक संकेत एकर तुषारधवल चोटी दिस रहल हैतन्हि। एहि अमल-धवल चोटी पर खेलाइत हिम-हास एक सम्मोहक शक्ति रखैत अछि।

ई हरियर-कचोर वन-प्रांत, फुलायल लता, पाथरकेँ भेदि कऽ फुटैत झरनाक स्रोत आ' ताहि संग ई नेत्र-रंजक हिम-हास! सरिपहुँ सौन्दर्यक कोनो सीमा नहि छैक, एकर कोनो परि-भाषा नहि देल जा सकैछ।

'प्लेटो'क शब्द मे यदि कोनो वस्तु सुन्दर अछि तँ एकर कारण एकेटा भऽ सकैछ जे ओ अत्यन्त सुन्दर अछि; अन्यथा ओकर व्याख्या नहि भऽ सकैछ, ने ओकर विवेचन सम्भव अछि।

जँ हलसुक रौद रहौ तँ एहि हिम–हास केँ हम अट्टहास नहि कहबैक। ठोर पर खेलाइत मुसकानमे एक दोसरे जादू रहैत छैक। अट्टहास जँ ककरो हार्दिक उल्लासकेँ व्यक्त करैत अछि तँ ई मन्द मुसकान अपन सरस-परससँ दोसरोक हृदय-तारकेँ झनझना दैत छैक।

वास्तवमे हिमालयक निष्कलंक सौन्दर्यकेँ केओ तखन देखि सकैत अछि जखन ओतऽ खाली बर्फे-बर्फ रहैत छैक। दूर-दूर धरि चानीसँ छारलि प्रकृति अपन पावन छटा सँ मन केँ विस्मय-विमुग्ध कऽ दैत अछि।

प्रकृतिक नीरवप्रान्त हमरा बड्ड नीक लगैत अछि ; परन्तु जखन सौन्दर्यसँ अभिभूत भऽ उठैत छी तँ एकान्त प्रियगर नहि लगैत अछि। संयोग छल जे एहि यात्रामे संगमे एक मित्र छलाह ओ हुनक पत्नी, कमला देवीकेँ तँ जेना हमर स्वभावक परिचय भेटि गेल छलैन्हि। हमर एकान्त चिन्तनमे बाधा देब ओ अपन पुनीत कर्त्तव्य बुझैत छलीह। हमरो ई बेजाय नहि लगैत छल ; कारण जे हुनक एहि चंचलताक पाछाँ एक उदार-हृदय सेहो छल। अपना हाथसँ चाह बना कऽ जखन ओ दैत छलीह तँ अपार संतोष होइत छल। एकदिन हम हुनका कचकचयबाक अभिप्रायसँ कहलियन्हि—देखू, हमरा लेल जे चाह बनाबी ताहि दिस नजरि नहि दिऐक। कमलाजी मुस्कुरा कऽ पुछलन्हि—किऐक, नजरि लागि जायत की ?

हम कहलिऐन्हि—हमरा नजरि लगबाक जतेक डर नहि अछि ततेक चाह बेशी मिट्ठ भऽ जयबाक।

कमला देवी अनजान बनैत पुछलन्हि—कही तँ थोड़ेक 'लीकर' दऽ दियैक। हम कहलियन्हि—आब छोड़ि दियौक। चीनी तँ ठीके छलैक फेरि अहाँक हृदयक माधुर्य्य ओहि मे मिश्री घोरि देने छैक—'लिकर' देने की होयतैक ?

आ तखन बेचारी केँ लजयबाक अतिरिक्त की रहि जाइत छलन्हि ?

डल झीलक फुलायल अगनित कमलक फूल दिस संकेत करैत हम कहने छलियन्हि—ई पद्मासन अहींक हेतु अछि कमला जी ! जाउ एकर शोभा बढ़बिऔक। ओ विहुँसैत बजलीह—हमरा डुबबाक लेल एतेक जलक प्रयोजन नहि होयतैक।

परन्तु हुनका चुरू भरि पानि मे डुबबाक प्रश्ने कहाँ उठैत छल ?

अस्तु ! ई तँ विषयान्तर भऽ गेल। आँखिक आगू परसल ई नैसर्गिक चारुता, जेना विराट पुरुषक क्रीड़ा-क्षेत्र हो, हास्य ओ विनोदक एक बृहत् एवं अद्भुत प्राङ्गण हो। तत्काल मनमे फुरल जे नारीकेँ प्रकृति कहऽबाला बहुत सोचला-विचारलाक बादे से कहने होयतैक। 'नयन न तिरपित भेल' तँ दुनू मे समान रूपेँ सार्थक छैक।

फेर यैह बात कमला देवीसँ कहलिऐन्ह। अपन सुन्दरताक बखान सुनि हुनका प्रसन्नता तँ अवश्य भेलन्हि तथापि उपालम्भक स्वरमे बजलीह—जतेक बनयबाक हो, बनौने जाउ। रोकबे के करत ?

हम कहलिऐन्ह—विद्यापतिक पद सँ पढ़नहि हैब—"चाँद सार लए मुख घटना करु"—एहि मे कविक यैह भाव छन्हि जे 'चान' अर्थात् हिमांशुक मृदु हिमानीसँ नारी-सौन्दर्यक बिधान भेल अछि। अहाँकेँ देखि हमरा ई सर्वथा सत्य बूझि पड़ैत अछि। दोसर जे हिमराशि-मंडित

प्रकृतिक बीचमे अहाँ लगितहुँ कतेक दिव्य छी.......एकदम तुषार-धवला सरस्वती जकाँ !

अपन सौन्दर्यक आकस्मिक प्रशंसा सूनि हुनक मुख पर लालिमाक लहरि दौड़ि अयलन्हि..... ओहने लालिमा जाहि सँ काश्मीरक धरती अपन सेवक श्रृंगार करैत अछि ।

पश्चात ओ अपन पतिक चर्चा करैत बजलीह—आइ धरि ओ लक्ष्मी कहि-कहि बनबैत छलाह । आब अहाँ सरस्वती कहि रहल छी । एना नहि हो जे लक्ष्मी ओ सरस्वतीक उपासक अपनोमे लड़ि पड़थि !

एहि व्यंगक सहज उत्तर दैत हम कहलियन्हि—तकर भय नहि करू । सरस्वतीक उपासक तँ सदा सँ अकिंचन रहल अछि । ने हम लोभ करब, ने झगड़ाक प्रश्न उठत........

हम लखिमा देवीक चर्चा कयल । लखिमा देवी राजा शिवसिंहक लेल भनहि लक्ष्मी रहल होथुन्ह; परन्तु विद्यापतिक लेल तँ सरस्वतीए छलथिन्ह ।

एक अपूर्व दीप्तिसँ कमला देवीक मुख-मण्डल दीप्त भऽ उठलन्हि । प्रसन्नताक रेखा ठोर पर खेलाय लगलन्हि । हम देखलहुँ—चारूभर हिमालयक अमित सौन्दर्य-राशि ओ बीच मे ठाढ़ि ई तुषार-धवला सरस्वती !

सरस्वतीक दिव्यकांति केँ तुषार-धवल कहल गेल अछि—स्निग्ध ओ रुचिर, चिर मधुर ओ चिर-नवीन ।

विद्यापति जखन सौन्दर्यक कल्पना कयलन्हि तँ ओकरा' अप-रूप' कहलथिन्ह ! अपरूप जकर दर्शन प्राणमे पुलक ओ स्वर मे संगीतक सृष्टि करय। वैह 'अपरूप' समग्र सौन्दर्यक रूपायित राशि आँखिक आगूमे पसरल अछि—कमला देवीक रूपमे वन-वैभवक रूपमे, हिमहासक रूपमे। ई 'अपरूप' एहन अछि जे 'तिल-तिल नूतन होय ....'। एहि पुननवा प्रकृतिकेँ देखि 'नयन न तिरपित भेल' कोनो उलहन–उपराग नहि; जीवन–यात्राक एक सम्बल अछि।

ई अमल-धवल हिमाभ्र-शिखर, कालिदासक शब्दमे—'अचलं प्राप्य गौरं तुषारैः', मानव मनक सहज संवेदनशीलता सँ अन्तर्दीप्त, अपन आर्द्रता, चित्रमयता, निसर्ग-रमणीयता सँ मनोरमा प्रकृति प्रियाक गात...........अपन सहज-सौन्दर्यसँ ई कतेक भव्य छल ! वस्तुतः 'सहजता' सौन्दर्यक सबसँ पैघ उपादान थीक।

हम यैह सभ सोचैत छलहुँ ता' ओम्हर कमला देवीक आँखि सौन्दर्य-सागरमे निमग्न छल। एक पुरुषक नारी विराट पुरुषक प्रेयसीक सौन्दर्य केँ निहारि रहल छलि। सत्य पूछी तँ एक नारी अपने रूप-राशि पर विस्मित ओ विमुग्ध छलि।

एहि सहज सौन्दर्यसँ क्यो कोना तृप्त हैत ! कमला देवी बजलीह.......'अनुभव काहु न पेख' तँ एतहि चरितार्थ होइत छैक।

तावत् निकटक पहाड़क हिमराशि पर ससरैत एक कारी चिह्न ध्यान आकर्षित कयलक। श्वेत स्निग्ध हिमपुंज पर ओ चन्द्रमाक कलंक बुझि पड़ैत छल। ज्ञात भेल जे एतुका निर्धन निवासी एहिना उपर जाकऽ बर्फ अनैत अछि और फेर बाजारमे बेचैत अछि।

विराट पुरुष प्रेयसीक सौन्दर्य्य बाजारमे बिकाइत अछि। ई सभ सोचि मनमे नानाप्रकारक भाव उत्पन्न होमय लागल।

पश्चात् कमलादेवीसँ कहलिऐन्ह—आब चलक चाही। नहि जानि, हमर मित्र की सभ आशंका करैत हैताह।

एहि सरस परिहाससँ कमला देवी खिलखला उठलीह। जेना एकाएक स्निग्ध, श्वेत, तुषार-कण झहरि पड़ल हो।

आ' नीचा उतरैत हमरालोकनि एक बेर पुनः एहि 'नेत्रकरी पुनर्नवा' प्रकृतिकेँ भरिआँखि देखऽ लगलहुँ।



देखल नयन सरूपे

"जखन विधाता पुरुषक निर्माण कऽ रहल छलाह तँ ओ स्कूल मास्टर छलाह और हुनका बस्तामे उपदेश एवं सिद्धान्त भरल छलन्हि, किन्तु जखन ओ नारी-निर्माणक लेल उद्यत भेलाह तँ सहसा एक कलाकार बनि गेलाह और हुनका हाथमे खाली रंग ओ तूलिका छलन्हि।" —कवि रवीन्द्रक एहि उक्ति पर विचार करैत-करैत जेना हम दोसर भावनालोकमे पहुँचि गेलहुँ। देखल जे सोझाँमे एक सुन्दरी ठाढ़ि छलीह। मुखमंडल अपन सहजतासँ दीप्त छल और आँखि भहुँसँ सुरेखित छल। पैघ-पैघ ओ कारी आँखि........ मुख-कमलक मधुपान करबाक हेतु उड़बा लेल तत्पर भ्रमर सदृश आँखि...... एक अद्भुत चंचलता छल ओहि पैघ-पैघ आँखिमे........अवस्थाक सहज धर्म छल ओहि आँखिमे....

हम सोचैत छलहुँ ओहि सौन्दर्यक अलौकिक दीप्तिक विषयमे। जेना 'चाँद सार लऽ' मुखक घटना कैल गेल हो। मनोहर मुख पर ओ लाल-लाल अधर.... .... कमलक फूलक संग जेना मधुरी फुलायल हो.... —

सोनक लतामे फुलायल कमल थिक अथवा द्रोणलताक बीचमे उदित ई चन्द्रमा ...... ? हम सोचिरहल छलहुँ। जे हो! एहि 'सहज प्रसन्न मुख'क दर्शनसँ अतीव-सुख भेटि रहल छल।

हम एकटक देखि रहल छलहुँ........

उभय उरोजकेँ स्पर्श करैत हुनकर फूजल केश-समूह और ताहिसँ ओझरैल मोतीक माला! जेना सुमेरुपर्वत पर तारासभ उगल हो।

नील वसनसँ घेरल सम्पूर्ण तन!

उन्नत वक्षस्थलकेँ बेर-बेर झपबाक निष्फल प्रयास .. कोनो पुण्यवाने एहन सुन्दरीक साहचर्य पाबिसकैत छलाह.... मनमे निराशा पसरल जा रहल छल।

ताहिसँ की? कृपणक पाछू चलैत आशा-लुब्ध भिखारि जकाँ हमर दुनू आँखि ओहि रूपवतीक पाछू दौड़ैत रहल... दौड़ैत रहल........

सोझामे छल जलधारा। सुन्दरी ओहिमे स्नान करऽ पैसलीह। आ' हम कामिनीकेँ स्नान करबाक बेलामे देखल।

स्नान करैत सुन्दरीकेँ देखियो कऽ आजुक दिनकेँ शुभ कियैक ने कहल जाय? अपन भाग्यक सराहना कोना नहि करू?

अहाँ सुन्दरीकेँ भरि आँखि देखल नहि आ' काम-देवक अपन पाँचो वाणसँ बेधि देलन्हि। एकटा विचित्र विवशता कहब एकरो !

चिकुर-जालसँ खसैत जलक धार जेना मुख-चन्द्रमाक भयसँ केशरूपी अन्धकारक रुदन छल। वक्ष जेना चक्रवाक-युगल हो। ई आकाशमे उड़ि ने जाय ताहि शंकासँ सुन्दरी जेना ओकरा अपन दुनू भुजामे बन्हने छलीह।

फेर ई शरीरसँ सटल तीतल वस्त्र ! मुनिओक मनमे कामोद्रेक करबामे सक्षम छल ओ। आर्द्र वस्त्रसँ आबृत्त उरोज लगैत छल जेना सोनाक बेल पर तुषार पड़ल हो....

जे हो ! हमर आशा पर तुषार-पात नहि भेल छल !

हम एहि सद्यःस्नाता सुन्दरीकेँ देखैत रहलहुँ। ओ नीक जकाँ मुँह पोछलन्हि। अद्भुत कान्ति फूटि पड़ल.... जेना केओ सोनाक दर्पणकेँ माँजि, ओतऽ आनिकऽ रखने हो....

सोचैत छलहुँ.......कहाँसँ एतेक रूप चोरिकऽ अनलन्हि अछि ई ?

देखैत रहलहुँ तथापि नयन तिरपित नहि भेल। रूप-दर्शनक लालसा यथावत् बनल रहल। रहि-रहि मनमे उठैत छल ....'भल कय पेखल न भेल !'

मुदा संयोग देखू। पवनक स्पर्शसँ हुनकर वस्त्र ससरि गेलन्हि आ' हम जेना नव-जलधरक नीचाँ विद्युत् रेखाक झलकी पाबि लेलहुँ.......

फेर ओ अलक्षिते रूपसँ हमरा दिस तकलन्हि आ' मुस्कुरा उठलीह। रातुक अन्हरियामे इजोरिया छिटकि गेल।

हमर प्राण चंचल भऽ उठल ......लागल जेना ई सुन्दरी काम ऐन्द्रजालिकक मायाविनी नटी होथि ... -

सौन्दर्यमे भाव-विह्वल करबाक कतेक सामर्थ्य छैक ?

हमरा आँखिमे एक नव दृश्य नाचि गेल ... .. जखन विधाता प्रथम-प्रथम नारीरूपक रचना कैने छलाह ....

पूर्णिमाक चन्द्रमासँ मुखकान्ति सजल, फुलायल ओ फड़ल सुन्दर-सुकुमार लतासँ शरीर-विधान लऽ कऽ ओ नारीक कला-पूर्ण रचना कैलन्हि। फेर द्वितीयाक चन्द्रमासँ ललाट-वंकिमा, मृगीक चंचल आँखिसँ लोचन-लीला, शुक-मुखसँ नासिकाग्र, मधुरीक फूलसँ अधरोष्ठ एवं नील रेखासँ युक्त सुन्दर कम्बुसँ ग्रीवाक रचना क' क' जेना हुनक स्वप्न साकार भऽ उठल होइन्हि। अपन निर्माण-साधनाक पूर्णता पर ओ स्वयं विस्मय-विमुग्ध छलाह। कनेककाल धरि गुमसुम रहि

कहलथिन्ह—"आब जाउ; कविक हृदय अहाँक आसन थिक, ओतहि निवास करू। अपन रूप-रश्मिसँ हुनक अन्तरकेँ आलोकित करू। अपन स्नेह-सुधासँ हुनक कल्पना-क्षेत्रकेँ उर्वर बनाउ। अपन स्वर-संगीतसँ हुनक नीरव वीणामे गान भरू। आ'र फेर कविता-गंगाक रूपमे हुनक कण्ठसँ फूटि पड़ू।

त ई सुन्दरी कोनो कविक हृदय-निवासिनी प्रेयसी तँ ने छलीह? सरस परससँ वस्त्रक ससरब, फेर मन्द-मधुर मुसकान, सभमे एकटा सम्मोहक भाव छल। सौन्दर्यक ई दिव्यता अनायास कंठसँ फूटि पड़ल—

तों विहुँसली झड़य लागल फूल!
ससि पड़ल सहजहि तोहर प्रसन्नता
केँ जानि श्वेत दुकूल।
कमल सम कोमल तोहर सखि गात
भुजामे छल नव मृणालक कान्ति
पुष्ट वक्षा-स्थल-युगल छवि सार
गिरि-सन्धिमे शोभित परम ग्रिमहार
की तोहर अतुलित प्रभाक उल्लेख
कऽ सकत ई छन्द?
पाबि किरणक स्पर्श होइछ दीपद्युति
अति मन्द।

तोँ प्रकट भेलीह सखि लय चन्द्र केर
सोलहो कला
नीलघनमे प्रस्फुटित अछि भेल
की नव उत्पला ?
हे हमर चिर-कल्पने ! हे चिर-युवति !!
निश्चय तोँही छल हैवह विद्या-
पतिक वरयौवति ।

विद्यापतिक वरयौवति, हुनक श्रेष्ठ युवती, हुनक हृदय-निवासिनी कल्पना सुन्दरी—जेना हमरा लगमे वैह ठाढ़ि होथि !

तँ की विद्यापतिक राधा यैह थिकीह ? राधा ! कविक सम्पूर्ण मानस-सौन्दर्यक घन-विग्रह !! जकर निर्माणमे कवि अपन निजत्व, हृदयक समस्त भाव-संसारकेँ अर्पित कऽ देलन्हि ।

आ'र तत्काल कवि विद्यापति अपनहि आबि उपस्थित भेलाह ।

कहलन्हि—"ने ई राधा थिकीह, ने ई ललिता । ई तँ नारी थिकीह; पुरुषक प्रेयसी नारी । राधा अथवा ललिता तँ उपलक्ष्य थिकीह, सत्य तँ थिकीह नारी ।'

हम देखैत रही नारीकेँ। 'गेल भाव जे पुन पलटावय सैह कलावती नारी'केँ, एक अपूर्व सौन्दर्य मणिकेँ, जनिक स्पर्शसँ सभ वस्तु अभिनव सौन्दर्य धारण करैत अछि।

स्वयं विद्यापति एहि पारसरूपक वर्णन करैत कहलन्हि —

जहँ जहँ पग-युग धरई
तँहि तँहि सरोरुह भरई
जहँ जहँ झलकत अंग
ताँहि ताँहि विजुरी तरंग
जहँ जहँ नयन विकास
ताँहि ताँहि कमल परगास
जहँ लहु हास संचार
ताँहि ताँहि अमिय विचार
जहँ जहँ कुटिल कटाख
ततँहि मदन सर लाख
हेरइत से धनि थोर
अब तिन भुवन अगोर।

विद्यापति फेर स्पष्ट कैलन्हि—सौन्दर्य वस्तुक नहि, व्यक्तिक गुण थिक। नारीक रूपकमल वस्तुतः पुरुषक स्नेह-रश्मिसँ प्रस्फुटित होइत अछि। पुरुषक प्रीति पाबि ओकर अन्तरमे अनुरागक संचार होइत छैक। पुरुषक आँखिक

स्नेह ओकरा कपोलमे लाली आ' ठोरमे मदिरा बनि कऽ समा जाइत छैक......आ'र तखन हम ओकरा 'अपरूप' कहैत छियैक........

कि हेरल अपरूप गोरि
पइठल हिय माँहि मोरि......

ओ लखिमा तँ ने छलीह ?—हम अनजानमे व्यंग्य कऽ बैसलहुँ। कवि मुस्कुराइत बजलाह—

कत विदग्ध जन रस अनुमोदइ,
अनुभव काहु न पेख।

फेर हमरा दिस तकैत पुछलन्हि—सौन्दर्यकेँ कतहु सीमा-रेखामे बान्हल जाय ?

हम निरुत्तर रहि गेलहुँ।

ता' श्रीमतीजी चाह लऽ कऽ उपस्थित भेलीह। आ'र हमर ध्यान टूटल तँ कवि ओहिना अन्तर्धान भऽ चुकल छलाह जेना हुनका ओहिठामसँ कहियो उगना विलीन भऽ गेल छलन्हि।

परन्तु कविक नारी........पुरुषक प्रेयसी हमरा सोझाँ ठाढ़ि छलीह........

अपरूप रूप मनोभव मंगल, त्रिभुवन—
विजयी माल !

चाहक प्याली हाथसँ लैत हम ओही रूपकेँ निहारि रहल छलहुँ।

ताज-दर्शन

हम जाहि दिन ताज देखऽ गेल रही से पूर्णिमा छल, सेहो की तऽ शरद्-पूर्णिमा। पूर्णिमा त सभ मासमे अबैत अछि परन्तु शरदक एहि पूर्णिमाक विशेषता छैक। चन्द्रमाक एहन शीतल ओ मनोरम रूप फेर देखबा लेल नहि भेटैत छैक, आ'र ज्योत्सना-स्नात धरती दूधसँ नहैल नव-बधू सदृश प्रतीत होइत अछि। ओहि रजत-रश्मिक स्पर्शसँ गात पुलकित भऽ उठैत अछि।

जखन हम ताजक दर्शन लेल प्रस्थान कैने रही त हमरा पूर्णिमाक ध्यान नहि छल। ओ त ओहीठाम जाकऽ ज्ञात भेल। आगरामे उतरलाक बाद जानल जे आइ पूर्णिमा थिकैक।

हम ताज लगमे ठाढ़ रही। उपर नीलाकाशमे शरदक पूर्णचन्द्र आ' नीचा यमुनाक कातमे स्फटिक-प्रतिमा जकाँ ठाढ़ ताजमहल। संसारक महान आश्चर्यमे एकटा 'ताज' सेहो अछि। हम ओकरे सौन्दर्यकेँ निहारैत रहलहुँ।

Scanned by CamScanner

लोक सब पूर्णिमा रातिक इजोरियामे 'ताज' देखब कियैक पसिन्न करैत अछि? हमरा मनमे ई प्रश्न नहि उठल। एहि धवल ज्योत्सनामे ओ अम्लान स्फटिक-मूर्ति हमरा बड़ बढ़िञा लागि रहल छल।

हठात् शेष प्रश्न'क ज्योत्सना रातिमे ताज देखबाक वर्णन स्मरण भऽ आयल। फेर ओ तँ छल पूर्णिमाक राति जखन चन्द्रमा अपन सोलहो कलाक संग आकाशमे शोभाय-मान छलाह। बास्तवमे एहि समयमे ताजक शोभा कतेक रमणीय छल! शरतबाबूक पौत्र ज्योत्सनाप्लावित यामिनीमे ताजमहलक अक्षय सौंदर्यक वर्णन करैत अघाइत नहि छथि। हमरा 'आशु बाबू' ओ 'कमल'क गप्प मोन पड़ै लागल।

'आशु बाबू' ताजमहलकेँ की देखैत छथि, शाहजहांकेँ देखैत छथि। हुनक असीम व्यथा जेना ताजमहलक अंग-अंगमे समायल हो। ओ देखैत छथि शाहजहाँक एकनिष्ठ पत्नीप्रेमकेँ जे एहि मर्मर काव्यक सृष्टि कऽ चिरकालक लेल अपन प्रियतमाकेँ विश्वक सम्मुख अमर कऽ गेल छथि।

परन्तु आधुनिका 'कमल'क विचारमे ताज एकनिष्ठ प्रेमक परिणाम नहि। थीक आखिर शाहजहाँकरनिवासमे खाली मुमताजे तँ नहि छलीह, औरो रानी सभ छलीह। हँ! एकटा विषय जे बादशाह कवि छलाह। आ अपन शक्ति, सम्पदा

एवं धैर्यसँ एतेक पैघ सौन्दर्यक वस्तु प्रतिष्ठित कऽ गेलाह। मुमताज तँ एक आकस्मिक उपलक्ष्य मात्र छलीह। ओ जँ नहिञो होइतथि तैयो बादशाह कोनो ने कोनो घटना लऽ कऽ एहन सौन्दर्य-सौधक रचना कऽ जैतथि।

जे हो, जँ पुरुषक प्रति पक्षपात नहि बुझल जाय तँ वृद्ध 'आशु बाबू'क बात अपना मोनक बात बूझि पड़ल। बादशाहक मोनमे जँ एकनिष्ठ प्रेम नहि रहितन्हि त एहि विलास-स्मृतिक कोनो महत्व नहि रहैत। फेर ओ कतबो पैघ सौन्दर्यक सृष्टि कियैक ने कऽ जैतथि, मनुष्यक हृदयमे ओहने श्रद्धाक आसन हुनका लेल नहि रहि जाइत।

हँ! शाहजहाँ कवि छलाह एहिमे सन्देह नहि। परन्तु वेदनेक गंगोत्रीसँ त कविता-गंगाक जन्म होइत अछि! एहि दृष्टिसँ की ई नहि कहल जा सकैछ जे एहि सौन्दर्य-सौधक निर्माणक लेल मुमताजक मृत्युक आवश्यकता छलैक! मुम-ताजक मृत्यु ताजक निर्माणक लेल ओकर एकटा महान दान थीक।

हम मुमताजक ओहि महान दानक दर्शन अपन अतृप्त नेत्रसँ कऽ रहल छलहुँ। वाणी मौन छल, आँखि सजग। ताज देखिसकबाक कारणेँ हम अपनाकेँ भाग्यशाली बुझैत छलहुँ। आखिर वर्णन कोना कैल जाय—'गिरा अनयन, नयन बिनु वाणी।'

आइ लाखो-करोड़ो व्यक्ति आबि कऽ ताजकेँ देखैत अछि। ओहि रातुक मेलाक विषयमे त किछु पुछबेक नहि! लोकक लेल मिस पड़ि रहल छल। दूर-दूरसँ दर्शनार्थी सब आयल छल। पूर्णिमाक स्निग्धता जेना ताजक महिमाकेँ द्विगुण कय रहल छल।

सभ ताज देखऽ आयल छल। शाहंशाह शाहजहाँक ताजकेँ नहि, प्रेमी शाहजहाँक ताजकेँ। 'ताज' प्रेमी सभक उपासना-गृह अछि। ई ताजक अमरत्वक सभसँ पैघ हेतु अछि।

ताज एक प्रतीक अछि—प्रेमक प्रतीक। मस्तक परक ताजसँ शाहजहाँकेँ शान्ति नहि भेटल, परन्तु एहि मर्मरक ताज सँ जेना ओकरा जीवनक हेरायल शान्ति भेटि गेल हो। आ' ओ सुदूर ठाढ़ भऽ कऽ चिरपिपासित जेकाँ जीवनक अन्तिम घड़ी धरि ताजकेँ देखैत रहल।

ओहि शीतल चन्द्रिकामे ताजक अपूर्व सौन्दर्य छल—शांत, सौम्य! चन्द्रमाक समस्त शीतलता जेना ओहि पर आबि कऽ केन्द्रीभूत भऽ गेल हो। ओहि विशाल एवं चिरस्थायी निर्निमेष वाक्यविहीन प्रेम-प्रतीक परसँ आँखि हटौनहुँ नहि हटैत छल।

चारू दिस अपार जन-समूह। ताजमहलक कोन कोन भरल छल! स्वच्छ इजोरियामे ताजमहल लगक ई जनस्रोत

केहन दिव्य लागि रहल छल ! सभक आँखि छल ताजमहलक दिश। कहुखन कऽ क्यो-क्यो प्रेमी अपन प्रेमिकाक आँखिमे किछु ताकऽ चाहैत छल। प्रायः ताजमहलक प्रतिबिम्ब देखि रहल छल। आ' ओहि बेचारीक कपोल पर लज्जाक लालिमा दौड़ि जाइत छलैक, नजरि नीचा झुकि जाइत छलैक। संसारमे शाहजहाँ ओ मुमताजक अन्वय-धारा चिरन्तनकालसँ बहैत आबि रहल अछि। एहीसँ ताजमहल कहिओ शून्य नहि भेल आ' भैयो कोना सकैत अछि ?

चारूभरसँ केमराक 'क्लिक'क शब्द सुनाइ दऽ रहल छल आ'र रहि-रहि कऽ 'फ्लैश'क ज्योति बिजली सदृश चमकि जाइत छल। ताजक शुभ्र आनन पर ओ छटा एहि तरहेँ फूटि पड़ैत छल जेना ओकर निविड़ प्रदेशमे सूतलि मुमताज मुस्कुरा उठलि हो। ओ मधुर मुस्कान गर्वसँ भरल छल—शाहजहाँ सदृश प्रेमी पैबाक गर्वसँ। आखिर किऐक नहि मुस्कुराइत ? स्त्रीकेँ आ'र चाहबे की करियैक ? ककरहु हृदयक निश्छल प्रेम भेटि गेल तँ संसारक सभटा निधि भेटि गेल।

रवीन्द्रनाथ एक स्थान पर लिखने छथि—"बुन्द-बुन्द वर्षाक रूपमे आकाशक मेघ धरती पर उतरैत अछि; धरतीकेँ पकड़हु देबाक हेतु। ओही तरहेँ कतहुसँ स्त्रीगण पृथ्वी पर अबैत छथि बन्धनमे बन्हैबाक लेल।"

मुमताज एहने स्त्री छलि जे शाहजहाँक बन्धनमे बन्हेबाक हेतु आयल छलि। परन्तु ओ खाली बन्हेबे नहि कैल, शाहजहाँकेँ सेहो बन्हैत गेलि। ओ प्रेम-बन्धन अटूट अछि, सर्वकालीन अछि। सनातन कालसँ इयैह क्रम रहल अछि। ताजमहलक ओही प्रेमक भव्य आकार थिक।

ताजमहलक लगमे बैसि कऽ नहि जानि कियैक एते बात सोचय लगलहुँ! हमर मित्र ताजमहलक स्थापत्य कलाक विवेचन कऽ रहल छलाह। "ताजमहलक महानता एकर प्रधान विशेषता छैक। पता नहि जे एहन महान भवनक निर्माण कोना कैल गेल हैत। संगमरमरक एक-एक टुकड़ीकेँ कोना-कारीगरीसँ जोड़ल गेल अछि! बुझि पड़ैत छैक जेना छेनीसँ काटि-काटि कऽ ताजमहलक मूर्ति गढ़ल गेल हो। निर्माणक दृष्टिसँ ई हुमायूँक समाधि आ कुतुबमिनारक सम्मिश्रण अछि—बस वैह कला। पानीक स्रोत तँ मुगलस्थापत्य कलाक अभिन्न अंग अछि। ओहने-ओहने पैघ भवनक निर्माण ओ लोकनि कैलन्हि किन्तु रहबा जोकर एकोटा कोठली बहरा जाय त आश्चर्य! तथापि पानिक स्रोत रहबेक चाही। नहि जानि जे पानिक हुनका लोकनिकेँ कतेक सौख छलैन्हि?"

परन्तु हमरा लेल ताजमहलक कलाक महत्त्व नहि छल। हम तँ ओकर भाव-पक्षक पर्यवेक्षण कऽ रहल छलहुँ। हमरा आँखिक आगाँ शाहजहाँ आ' मुमताजक मूर्ति उपस्थित भऽ आयल—शाहजहाँक हाथमे गुलाबक फूल छल और मुमताजक

आँखिमे लज्जा। दुनू गोटेक विषयमे सोचैत-सोचैत हम स्वयं हेराय गेलहुँ। फेर मुमताजक मूर्ति धूमिल होइत गेल और ओकर स्थान एक दोसर मूर्ति लऽ लेलक—चीन्हल-जानल। अहाँ एतऽ कोना? उत्तर भेटल—नहि चिन्हैत छी की? भला प्रेम-सौध एसकर देखल जाइत छैक? हुनका अधर पर मुसकानक लहरि दौड़ि गेलैन्हि। हम तऽ विभोर भऽ गेलहुँ! तन्द्रा टूटल तँ सोचल—ठोके की! ताज एसकर देखबाक वस्तु नहि थिकैक!

एकरा जाय दिअऽ—काव्य-शास्त्रक विद्यार्थी एकरा साधारणीकरणक प्रक्रिया कहताह। नायक आ'र नायिका जखन साधारण प्रेमी-प्रेमिकाक रूपमे बदलि जाइत अछि तखनहि तँ हम ओकर प्रेमसँ आनन्द उठबैत छी! हम सोचितहि रहलहुँ। मुमताजक समाधि पर ओ ताजमहल स्नेह मे अर्पित पुष्प सदृश शोभि रहल छल - शुभ्र गुलाबक फूल सदृश, जकरा एखनहि शाहजहाँक हाथमे देखने छलियैक। चन्द्रमाक किरण ओकरा और स्निग्ध बना रहल छलैक।

हमर मित्र शाहजहाँक शासन-कालक ऐतिहासिक विवेचन करय लगलाह। इतिहासकार लोकनिक मतक उल्लेख करैत ओ प्रमाणित करै लगलाह जे शाहजहाँक शासन कोना भीतरसँ शून्य छल। हुनका विचारेँ ई कला-कृति बर्बर मुगल शासकक क्रूर शासन पर आवरण नहि दऽ सकैत

अछि। अधिक उत्तेजित होइत ओ बजलाह जे ताजमहलक ई शुभ्र संगमरमर भारतक गरीब जनताक शोणित पर जोड़ल अछि। ओ कहैत रहलाह आ'र हम सुनैत रहलहुँ। परन्तु हम एहि सभ पर कोनो विचार नहि कैल। जेना सभ किछु बिसरि गेल रही। एहि शरद् पूर्णिमाक रातिमे हम ई नहि सोचय चाहैत रही जे ताजमहलमे लागल अपार धन-राशि शाहजहाँक खजानामे कतऽसँ आयल हैतैक? ठीके तँ भेल अछि—'बुद्धं शरणं गच्छामि'क महामन्त्र सँ अशोकक समस्त कलुष धोआ गेल त कि 'प्रेमं शरणं गच्छामि'क मधुर मन्त्रसँ शाहजहाँक सभ दोषक मार्जन नहि भेल हैत? आखिर प्रेमे त ईश्वर थीक।

हमरा शरद्-पूर्णिमाक ताजक ओ नयनाभिराम रूप नहि बिसरैत अछि। ओना तँ सभ इजोरिया ओ पूर्णिमाक रातिमे दर्शनार्थीक संख्या अपरिमित रहैत छैक; परन्तु शरद् पूर्णिमा दिन ताजक दर्शनक लेल दूर-दूरसँ लोक अबैत अछि। ओहि दिन कोनो तीर्थ-स्थानसँ एकर महत्त्व कम नहि रहैत छैक। एकर विशेष महत्त्व भेटि गेल छैक शरद्-पूर्णिमाकेँ।

हम दिनमे सेहो ताजक दर्शन कैल। परन्तु एक महान अन्तरक अनुभव भेल। सूर्यक किरणसँ चक-चक करैत ओहि स्फटिक-पुञ्ज पर अहाँक आँखि नहि ठहरत जेना ओ शाहजहाँक ऐश्वर्यक प्रतिरूप हो।

परन्तु राति कऽ शाहजहांक प्रेम पूर्ण हृदयक अनुमान हैत–
कते भव्य ! कते आकर्षक !!

दिनुका रूप ओ रतुका रूप मे एतेक अन्तर किऐक ?

राति कऽ ओकरा लग मुमताज जे रहैत छलि ।

आ' घर सँ दूर हमर मन विकल भऽ उठल ।।

पलास-फूल

'आइने-अकबरी' मे 'अबुलफजल' लिखने छथि—जे व्यक्ति कोनो तरहें नहि प्रसन्न कयल जा सकैत छथि, हुनका फुलायल केसरक खेत मे लऽ जाकऽ ठाढ़ कऽ दिऔन्ह ओ स्वतः आनन्द सँ विभोर भऽ उठताह। केसरक फूलक ई माहात्म्य अति प्रसिद्ध अछि। पर एतेक धरि निश्चित जे सभ प्रकारक फुलायल फूल मे ककरो प्रसन्न करबाक सामथ्य छैक। अतः राशि-राशि फूल जखन एकठाम देखलहुँ त मुग्ध रहि गेलहुँ। लाल-लाल फूल ! पतझार सँ प्रपर्ण गाछ मे ई फूल अभिनव आकर्षणक सृष्टि कऽ रहल छल। इयह छल छोटा-नागपुरक बसन्तक शोभा। एहि सँ आक्षितिज रक्तिम छल। एहि छोट-छोट लाल फूल मे अतीव सम्मोहक भाव छल। मन मे होइत छल जे दौड़ि कऽ ओतय चल जाइ—गाछक लग मे जा कऽ ओकर शोभा और नीक जेकाँ निहारि सकब।

आखिर एतेक रास फूल छैक कथीक ? केओ कहलन्हि जे पलासक फूल छैक। संकोच भेल जे एहि फूल केँ चिन्हियो ने सकल छलहुँ। प्रकृतिसँ कतेक अपरिचित छी से ओहि दिन नीक जेकाँ बुझबामे आयल। किछु काल धरि इयह सोचैत रहलहुँ। प्रेम ओ आदर त निश्चय परिचयसँ उत्पन्न होइत छैक। जकरा चिन्हल नहि तकरा प्रति प्रेम केहन ओ ओकर सौन्दर्यक प्रति आदर कोन ? आइ पलासक फूलकेँ चिन्हल त लागल जेना एकर लाल लाल स्तवक अपना दिस शोर कऽ रहल हो। कविक पंक्ति अनायास कानमे गुंजित होमय लागल—

बाजय बीन भ्रमर केर लागल,
उठल मदन स्वर जागि।
लाल-पलास कुसुम वन फूलल
लागल सौरभ आगि॥

पलासक फूल की फुलाइत अछि जेना सौरभक आगि लागि जाइत अछि। आइ एहि सौरभ केँ प्रत्यक्ष देखल, ओकर लाल ज्योति केँ देखल। बसन्तक वैभव पलास—ओकर नेत्ररंजक शृंगार ! एहि लाल पुष्पराशि सँ, उद्भासित वन प्रान्त हमर आकर्षणक केन्द्र छल।

बसन्तक ऐश्वर्य वर्णनसँ हमर समस्त काव्य भरल-पूरल

अछि। कवि लोकनि एक सँ एक मनोरम कल्पना कयने छथि, शृंगारक रसधार बहौने छथि तथा नैसर्गिक चारुताक वर्णन कय अपन पाठकके रसमुग्ध कयने छथि। वसन्तक पृष्ठभूमिमे एकसँ एक कवि प्रौढ़ोक्ति प्रचलित अछि। अखनहुँ प्राचीन कवि लोकनिक अनुकरण पर बसन्तक स्वागत-गान गायककविक अभाव नहि अछि।

बसन्तक स्वागत ! ऋतुराजक स्वागत !!

किन्तु आजुक यथार्थवादी कवि के जेना ई साहित्यिक रूढ़ि असह्य भऽ जाइत छन्हि। 'स्वागत बसन्त'क गायक कविक प्रति एक सहज आक्रोश हुनक कंठसँ फूटि पड़ैत छन्हि—

पिबइत दूध पवित्र मधुर माँ
मिथिला केर कोरमे बैसल।
के बताह कवि भाङ पीबि
स्वागत बसन्त अछि गाबि रहल ?

त की ऋतुराजक स्वागत गान कयनिहार कवि बताह छथि ?

हम कविक बौद्धिक सजगताक आदर करैत छी। वसन्तक वर्णन काव्यमे पढ़ि, ओकर सद्यः रूप पर निश्चय निराशा होइत अछि। धूरा-गर्दासँ मटमैल आकाशके देखि ओहि कवि लोकनि पर क्रोध होइत जे एकरा ऋतुराजक मर्यादा प्रदान कयलन्हि। फूल त सभ ऋतुमे फुलाइत अछि। शीतल

सुगन्धित बसात कोन ऋतु मे नहि बहैत छैक ? कोइलियोक कुहुकब सभ ऋतु मे सुनैत छिऐक। भ्रमरो सभ ऋतु मे फूल पर लुबुधल भेटत। चन्द्रमा सभ ऋतु मे आँखि कें प्रियगर लगैत छथि। फेर चैतक तऽस ओ बैसाख प्रचँड रौद सँ समन्वित बसन्तक प्रति एतेक पक्षपात किऐक ?

कामदेव वसन्तेक पृष्ठभूमि मे महादेव पर अपन पुष्प-वाण अजमौने छलाह। फल जेहेन भेलन्हि से सर्वविदित अछि। हुनक तृतीय नेत्रक ज्वालासँ स्वयं कामदेव तत्का-लहि दग्ध भऽ गेलाह। वसन्तक प्रभाव कोनों तरहें हितकर नहि भेल। ओ तऽ गौरीक रूपे तेहन मुग्धकारी छलन्हि जे महादेव स्वतः आसक्त भऽ गेलाह। कामदेवक पुष्पवाण जतेक काज नहि कयलक ततेक गौरीक रूप माधुर्य्य प्रभाव-कारी भेल।

से विह्वल कऽ देबाक शक्ति अछि रूप-सौंदर्य मे। इएह कारण थीक जे एहि पलासक फूल दिश बरबस ध्यान जाइत अछि। आइ एही कारणे हम वसन्तोक मूल्यांकन करबा लेल विवश भऽ गेल छी।

तखन ऋतुराजक स्वागत-गान गौनिहार कवि ?

कोठरी मे बैसि केबाड़क दुनू पट्टा बन्द कय सस्वर ऋतुराजक स्वागत कयनिहार कहियो हमर संवर्द्धनाक पात्र

नहि भऽ सकैत छथि। वस्तुतः प्रकृति वर्णन करबा लेल प्रकृतिक प्रति उत्कट प्रेमभाव चाही। प्रकृति दर्शन सँ अभिभूत कवि हृदये अपन रचना द्वारा ककरो हृदय मे प्रकृतिक प्रति आसक्तिभाव उत्पन्न कऽ सकैत अछि।

अशोकक फूलक विषय मे कवि प्रौढ़ोक्ति अछि जे ओ सुन्दरीक पदाघात सँ फुलाइत अछि। काव्य नाटक मे एहि दोहद प्रथाक विषय मे कवि लोकनि बड़ मनोयोग सँ वर्णन कयने छथि। पलासक फूलक प्रसंग आइ एकर स्मरण भऽ आयल अछि। एहन सुन्दर फूल की ओहिना फुला जाइत अछि? छोटानागपुर ई पलास-वन अनेरे फूल सँ लदि गेल हैत से मन नहि मानैत अछि। एहि पाछू अवश्ये ककरो कामना रहल हैतैक। जखन ककरो उत्सुकता भरल नजरि एहि गाछ पर पड़ल हैतैक, तखनहि एहि मे कोंढ़ी बहरायल हैतैक, जखन ककरो आंगुरक स्पर्श भेल हैतैक तखनहि ओ भकरार भेल हैतैक।

छोटानागपुरक प्राकृतिक सुषमा मनोरम अछि। एहि ठामक रहनिहार केँ फूल सँ नहि जानि कतेक प्रेम छैक? कोनो नवयुवती केँ नहि देखबैक जे फूल सँ अपन शृङ्गार नहि कयने हो। एहि नवयुवती सभकेँ देखि प्राचीन साहित्य मे वर्णित वनकन्या लोकनिक स्मरण भऽ अबैत अछि।

हुनको लोकनि कें फूल सँ एहिना प्रेम छलन्हि। आइ जें छोटानागपुरक जंगल मे ई पलासक फूल फुलाइत अछि से हिनकहि केशक शोभा बढ़ेबाक लेल। हिनकहि उत्सुकता भरल नजरि सँ एहिमे कोंढ़ी बहरायल। हिनकहि कोमल आंगुरक स्पर्श सँ ओ भकरार भेल अछि।

आब पलास-वन निकट छल और कनेकाल मे हम सभ ओहि वनमे पहुँचि गेलहुँ। फेर हम सभ फूलक बीचमे रही—ओहि फूलक, जे अपन सौंदर्य सँ ओहि वन-प्रान्त कें मुखरित कयने छल, जे एहि भू-भागक नवयौवनाक प्रसाधन छल। हमरा आँखि मे एक नारी मूर्त्ति झलकि गेल। अंग-अंग मे यौवनक प्रभा दमकि रहल छल—अवस्था विशेष सँ मातलि, वेणीमे पलासक लाल लाल फूलक विन्यास! हम ओहि मधुर रूपक विषय मे सोचय लगलहुँ।

हम दौड़ि कऽ एकटा पहाड़ी पर चढ़ि गेलहुँ। एकटा टहनीक के नहू-नहू लिबा कऽ थोड़े फूल तोड़ल। सौरभक आगि हाथमे शीतल लागि रहल छल। मन एक तृप्तिक अनुभव कयलक।

अबितहि कहलिऐन्ह—लाउ! अहाँक केशमे ई फूल सजा दिअ। पहिने तऽ लजेलीह, पश्चात् अयना लग जाकऽ ठाढ़ि भऽ गेलीह। सयत्ने हम हुनक केश-राशिक शृंगार

करय लगलहुँ—सामने अयनामे देखल जे ओ लाजें पानि-पानि भेज जा रहल छलीह।

एहि बीचमे एकटा फूल हाथसँ नीचा खसि पड़ल छल। ओकरा ओ उठा लेने छलीह। पश्चात् सुंघैत पुछलन्हि—एहिमे गमक त छैक नहि! अपनहुँ 'निर्गन्धा इव किंशुका' पंक्ति मन पड़ल।

एहन सुन्दर फूल आ' ताहिमे गमक नहि! रूप पर लुब्ध मनमे से भावे ने उठल छल। लावण्यक अपन प्रभा होइत छैक जकर आलोकमे मनुष्यक कोन-कोन उजागर भऽ जाइत अछि ... ...। इयह सब सोचैत रहलहुँ। तें की पलासक फूलक कोनो महत्त्व नहि छैक? सोनमे सुगन्धि रहने बड़ दीब—परन्तु ओहुना त सोनक मूल्य कम नहि होइत छैक। इयह सभ सोचि मनकें बुझाओल।

हमरा एहि तरहें विभोर देखि ओ पुछलन्हि—की सोचय लगलहुँ। और ओ फूल हमरा हाथमे धऽ देलन्हि, मतलब जे ईहो लगा दिअऽ।

और फेर कारी खोंपामे सज्जित एहि पलास फूलक नेत्ररंजक चारुता कें देखि ओकर सुगन्धिक अभावक कोनो भावेने उठल।

एक कहानी :: एक गीत

दस बाजि रहल छल ।

जाड़क राति । सीड़कसँ हाथ बाहर करू त हाथ सर्द भऽ जायत ।

सभ सूति रहल छल सभकेँ सूतल देखि हमरहुँ आलस भऽ रहल छल । परन्तु परीक्षाक कापी छल माथ पर.... काल्हि समाप्त भऽ जयबाक चाही । चारिम दिन 'रिजल्ट' बहरेबा लेल छैक ।

उत्तर-पुस्तिकाकेँ जँचबामे तल्लीन रही । लगैत छल-संगहि जेना हमरहु धैर्यक परीक्षा भऽ रहल अछि ।

एकाएक लगक खिड़की खुजि गेल । शीतल बसातक तीव्र झोंक आबि सौसे शरीरकेँ सिहरा देलक ।

उठि कऽ खिड़की बन्द कयल ।

हमर धैर्यक अवसान भऽ गेल। आब कालिह देखल जयतैक। कापीकें सीरमा तर राखि सुतबाक उपक्रम करय लगलहुँ।

चारियो-पाँच मिनट ने बीतल छल।

बाहर सँ ककरहुँ स्वर सुनि पड़ल। केओ गुनगुना कऽ गाबि रहल छल। सतर्क भऽ कऽ सुनल। स्वर चिन्हबामे भाङठ नहि भेल। मनहि मन हँसय लगलहुँ। अखन धरि हमहि टा नहि ओहो जागले जल।

सुनल गीत छल। एक बेर नहि अनेक बेर सुनने रही। आँखिक सोझाँ एक चित्र चमकि उठल।

गीतक पहिल चरण छलैक—भोर भेलै हे पिया भिन-सरबा भेलै हे!

केओ पति परदेश जा रहल छैक। भोरमे जयबाक छैक। भोर भऽ गेलै आ' ओकर पत्नी जगा रहल छैक।

त की ओकर इच्छा छैक जे ओकर पति परदेश जाइ? नहि! एना कोना हेतैक? परन्तु कयले की जाय?

'रेलिया न वैरी, जहजिया न बौरी, बैह पइसबे बौरी हो!'

कखनहु कऽ एहन विवशता उपस्थित भऽ जाइन अछि जे नहियो चाहैत सैह काज करय पड़ैत छैक।

एहि बेर गामसं फिरती बेर हमरा एकटा नौकरक बड़ आवश्यकता छल। घरसँ चारि सै मील पर रहैत छी। कमसँ कम अपना ओहि ठामक एकटा आदमी जरूरी छल। परन्तु एतेक दूर जयबा लेल केओ तैयार नहि भेल। दस-पाँच टाका लेल घर छोड़िक एतेक दूर के जाय चाहैत ? एक-दू गोटा तैयारो भेल त फेर अस्वीकार कऽ देलक।

—किऐक हौ ?

—ओतेक दूर के जैत ? जगन्नाथजी लग।

—जगन्नाथजी लग ? से तोरा के कहलथुन्ह ?

—फल्लाँ बाबू कहैत छलथिन्ह जे बहुत दूर रहैत छथिन्ह। ओतेक दूर नहि जयबौ बाबू।

हम बुझौलियैक—ओ तोरा मिथ्या कहलथुन्ह अछि। बस कलकत्ता जतेक दूर छैक ओ स्थान चौबिस, घंटाक रास्ता।

तइयो ओकरा विश्वास नहि भेलैक। अपना स्वार्थें त हम बहुत किछु बुझौलियैक।

फेर अनायास एक गोटा भेटि गेल। हमरहि गाम लगक छल। अठारह बीस बरसक, रंग श्याम, स्वस्थ, परन्तु आकृति पर उदासीक छाया।

हम सभटा कथा स्पष्ट रूपें कहि देलियैक। आशा त कम्मे छल जे इहो चलत।

पुछलियैक—तोहर वियाह भेल छह ?

लजाइत स्वरमे ओ कहलक—हँ।

हम कहलियैक—त सुनऽ। हम छः मास पर गाम घुमनैक से यदि पसिन्न होअऽ....

हमर अभिप्राय ओ बूझि गेल। बाजल—त की हैतैक, जहिया अपने अयबैक तहिये हमहूँ अयबैक।

मनमे विचारल एहि बेर नीक भाग्य अछि।

एक गोटे मध्यस्थ भऽ कऽ दरमाहा स्थिर कऽ देलथिन्ह।

हम ओकरा मुख दिश दृष्टि देलियैक। जेना ओ एहि क्षुद्र जीविकाकें पाबि प्रसन्नासँ भरि गेल हो। ओ दोसरा दिन भोरमे अयबाक वादा कऽ चल गेल। हमरा साँझमे जयबाक छल।

से हम इयैह सभ सोचि रहल छलहुँ।

ताबत धरि ओ गीतक अन्तिम अंश गाबय लागल छल... जेहने अएलियैक बाबा घर सँ तेहने बना दय हो ...

पति परदेश चल जयतैक त पत्नी नैहर चलि जयतैक। पति नहि चाहैत अछि जे ओकर पत्नी नैहर जाइ। जँ ओ नैहर चलि जैत त ओकर विवाहमे भेल खर्चक सभटा टाका दऽ कऽ जाय पड़तैक। परन्तु ओ टाका सभ कियैक घुमा कऽ देतैक ? की ओ ओएह रहि गेल अछि जे विवाहक पहिने छल ? ओहो पतिक सम्मुख एक समस्या राखि दैत अछि।

यदि ओ अपन रुपैया चाहैत छथि त जेहेन हम पिताक घर सँ अयलाक पूर्व रही तेहने बना ने देथु। दुनू मे सरस परिहास चलि रहल छैक। एहि सँ होइत छैक की ? पति केँ त परदेश जाइए पड़तै।

ने रेल बौरी छैक, ने जहाज। असल मे बौरी त ओ कँचा छैक जकरा उपार्जन करबा लेल गामे-गामे छिछिआय पड़ै छैक।

झूमरक अर्थ होइत अछि—झुमायब। झूमर सुनि हमरा अपूर्व आनन्दक अनुभव होमय लगैत अछि। आइ एहि प्रवासीक कठ सँ एहि भावात्मक झूमर केँ सुनि मन झूमि उठल।

हमरा आँखिक सोझाँ अपना नौकरक घरक चित्र स्पष्ट छल। सोलह वर्षक एक नवयौवना अपना पति केँ जगा रहलि छैक। ओकर पति आइ नौकरी पर जा रहल छैक, मिथिला क एक ग्रामाञ्चल सँ दूर, बहुत दूर, छोटानागपुरक एक शहर मे....

ओकरा आँखिक नोर गाल पर टघरि अयलैक अछि। परन्तु ओ सन्तोष धारण कयने अछि। छब्बे मास त अवधि छैक। फेर ओ ओकरा लेल कतेक वस्तु आनतैक—साड़ी, साया, ब्लाउज........

गीत समाप्त कऽ ओ सूति रहल।

भोर मे निन्न टूटल त देखल जे पत्नी जगा रहल छलीह—आइ कालेज जयबाक नहि अछि की ?

हम अलसाइत उठबाक चेष्टा करय लगलहुँ। हँसैत कहलिऐन्ह—अहूँ गाउ ने भोर भेलै हे पिया ...

परन्तु हुनका लेल छः मासक नहि छः घंटाक व्यवधान छलन्हि—दस बजे सँ चारि बजे धरिक।

रसाल-सौरभ

"आम खयबाक मुँह !"

"आम खयबाक मुँह मैथिलीक एक प्रेम कथा थीक। ताहि दिन मे लिखल गेल छल जहिया एहि तरहक प्रेम कथा लिखब सामाजिक नैतिकताक दृष्टियें वर्जित बुझल जाइत छल। परन्तु युगक यथार्थक सम्मुख केओ कतेक दिन धरि बाट छेकने रहितक ?

"मिथिलाक आम्र कुञ्ज मे दू अपरिचित तरुण-तरुणीक साक्षात्कार होइछ। तरुण हृदय अनायास वयःसन्धि पर थकमकाइत रूपमतीक माधुर्य्य पर मुग्ध भऽ जाइत अछि और अपन तृषित पिपासित हृदय कें जुड़ायबाक लेल, हाथक रस-पूरित आमक लेल याचना करैत अछि। परन्तु ओ ऋतुक एहि पहिल गोपी कें, जकरा ओ अपना देवता कें चढ़ेवा लेल रखने अछि एहि अपरचित कें कोना अर्पित कऽ देऔ ? ओ

व्यंगपूर्ण मुद्रा मे बाजि उठैत अछि... हिनके आम खयबाक मुँह छन्हि ! एहि तरहें ओ मुग्ध एहि प्रणयपिपासु तरुणक अनुरोधक तिरस्कार कऽ दैत अछि ?

"परन्तु जखन किछु मासक पश्चात तरुणीक विवाह होइत अछि और 'वर'क प्रस्तावक फलस्वरूप कोबर घर मे विधिकरीक प्रेरणा सँ जखन ओ हुनका हाथ मे पाकल आम देबा लेल विवश कयल जाइछ त 'वर' व्यंगपूर्वक पुछैत छथिन्ह—हमरा की आम खयबाक मुँह अछि ?

' सुन्दरी एहि तरहक उत्तर सुनि कऽ चेहा जाइत छथि। फेर अपन 'वर' कें चिन्हैत देरी नहि होइत छन्हि। और ओ ओहि मधुर आमक संगहि अपन स्नेहसिक्त हृदया एहि अपरिचितक हाथ मे अर्पित कऽ दैत छथि।

एक युग पूर्वहि प्रकाशित मैथिलीक एक पुस्तक मे संकलित एहि प्रेम-कथा कें आइ ओ बेश मनोयोग सँ पढ़लन्हि अछि। सम्पूर्ण कहानी मे प्रवाहित नैतियक रसधार मे अवगाहन कय ओ हमरा सँ एहि विषय मे बिनु जिज्ञासा कयने नहि रहि सकलीह।

तत्काल हुनक जिज्ञासाक उत्तर मे हमहूँ सैह प्रश्न कयलियन्हि जे ओहि कथाक नवविवाहित युवक कयने छलथिन्ह। ओ त हमर उत्तर सुनि लजा गेलीह परन्तु हमरा आँखि मे

फिरि गेल गामक चित्र ! दूर-दूर पसरल आमक गाछी । हरियर-हरियर पातक बीचमे लटकल लाल पियर आम । डारि सँ झुलैत मचकी । धिया-पुताक किलकारी मारब । तरुणीक नूपुरक रुन-झुन । एक-एक कऽ सभ प्रत्यक्ष भऽ उठल । हमर देश गामक अछि और ई आम हमरा गामक वैभव थीक ।

आम फलक राजा थीक । भारतवर्षमे एक सँ एक फल अछि—सेव, नाशपाती, केरा, अनार, अंगूर, नारंगी—कतेक नाम गनौल जाय ! परन्तु आम सभक राजा थीक ।

एतेक रास फलक अछैत आमेकेँ राजा कियक कहल जाइत अछि ? सभ फलक अपन-अपन स्वाद होइत अछि, अपन-अपन सुरभि छैक । के ककरा सँ पैघ, के ककरा सँ छोट भला ई कोना कहल जा सकैत अछि । एतेक ओझ-रौट केँ रहितहुँ हमर मन अनायास कोना मानि जाइत अछि जे आम सभक राजा थीक ।

सरिपहुँ आम सभ फलक राजा थीक । एकरा मानबामे हमरा कनियो तारतम्य नहि अछि । हम एकर सफाई देमय नहि चाहैत छी । परन्तु एतेक कहि देब उचित हैत जे वन-राज जेकाँ ई फलराजो ककरहुँ द्वारा राजतिलक अपेक्षा नहि रखैत अछि ।

आमक दोसर नाम अछि रसाल । रसालक अर्थ होइछ,

रसपूर्ण, मीठ, मधुर, स्वादिष्ट सुन्दर, शुद्ध ओ मार्जित। की ई सभ सार्थक नहि अछि ?

भारत आमक देश थीक। देशक एक भाग सँ दोसर भाग धरि चलि जाउ, एकर विभिन्न आकार-प्रकार भेटत। परन्तु सभ आमे थीक रस ओ माधुर्य्यक प्रतीक। भारतीय संस्कृत ओ साहित्य एहि अमृत फलक महिमा सँ मंडित अछि। एकर फले नहि पल्लवो हमरा लोकनिक धार्मिक जीवनमे बड़ महत्वक अछि। कोनो शुभ काजमे हम आम केँ नहि बिसरि सकैत छी। मांगलिक अवसरपर राखल गेल जल-कलशमे यावत धरि आमक पल्लव नहि राखल जाइत अछि तावत धरि ओकर पवित्रता संदिग्ध अछि।

आम हमर प्राकृतिक सौन्दर्यक अक्षय निधि थीक। साहित्यकार तऽ एकर बड़ कोमल ओ मधुर कल्पना कयलन्हि अछि। हमर साहित्यक पृष्ठ-पृष्ठ रसाल-सौरभ सँ रसयुक्त बनल अछि।

वसन्तक आगमन भेल ता डारिमे मंजर बहरा जाइत अछि। चारूभर मह-मह करय लगैत छैक। एक हल्लुक मधुर मादकता बसातमे पसरि जाइत अछि। लोकक ध्यान बरबस आकृष्ट भऽ जाइत छैक। कवि गुरु कालिदास तऽ आमक मंजर केँ वसंतक तीक्ष्ण बाणे कहलन्हि अछि। हुनक शब्द केँ यदि दोहरौल जाय तऽ वसंतक आगमन की होइत

अछि ओ तऽ पुष्पित आम्रमंजरीक तीक्ष्ण वाण लय धनुषपर भ्रमर पंक्तिक डोरी चढ़ा रसिक कें बेधबाक निमित्त आबि पहुँचल अछि।' रसाल वृक्षक ई मंजर वसन्तक अक्षय सौन्दर्य थीक। मंजर सँ भाराक्रान्त आमक गाछमे मिलनक आतुरता जगेबाक अपूर्व क्षमता अछि। जेना कालिदास वर्णन कयलन्हि अछि-'अपना स्त्री सँ दूर रहबाक कारणे जनिक हृदय चंचल भऽ रहल छन्हि ओ यात्री जखन कंटकित रसाल तरुकें देखैत छथि तऽ ओ अपन आँखि मूनि लैत छथि, अपन नाक बन्द कऽ लैत छथि, जे कतहुँ मंजरक मधुर सुगन्धि नाकमे पहुँचि पत्नीक स्मरण ने दिया दियै।" और एहि तरहें 'एहि मजरल आमक गाछ सँ, सुवाहित पवन सँ मदमस्त होमय वला कोइलीक कुहुक सुनि मनस्विनी स्त्रियोक मन विचलित भऽ जाइत छन्हि।' फेर भवभूति रचित मालती-माधवक स्मरण करू—ओ मदनोत्सवक वर्णन जखन आमक मंजर सँ मदनक पूजा कयल जाइत छल। एही मदनोत्सवक दिन माधव ओ मालतीक दृष्टि सम्मिलन भेल छलन्हि आ' दुनू प्रेमसूत्र सँ आबद्ध भेल छलाह। — — और वसन्तक सैह मादक मंजर जखन ग्रीष्म ऋतुक लाल पीयर फलक रूप धारण कऽ लैत अछि तऽ एना प्रतीत होइत अछि जेना रूप-यौवनक समस्त रस एहि सँ छलकि पड़त। वास्तवमे कवि लोकनिक तऽ एकर वर्णनमे शृङ्गारक धारे बहा देलन्हि अछि। एकर रसाल नाम सर्वथा उपयुक्त सिद्ध होइत अछि।

आमक महिमाक वर्णन करैत संस्कृत साहित्यकार एक स्थानपर बड़ सुन्दर उत्प्रेक्षा कयने छथि :—

त्रपाश्यामा जंबू: स्फुटित हृदयं दाड़िमफलम्
भयादन्तस्तोयं तरुशिखरजं लांगलिफलम्
समाधत्ते शूलं हृदयपरितापं च पनसः
समुद्भूते चूते जगति फलराजे प्रभवति

—आमक उत्कर्षकें देखि आन-आन फलक की दशा होइत छैक? जामुनक मुँह स्याह भऽ जाइत छैक। दाड़िमक छाती फाटि जाइत छैक। नारिकेर पानि-पानि भऽ जाइत अछि और कटहरक हृदयमे शूल पैसि जाइत छैक।

आमक वृक्षक महत्व प्रतिपादनमे एक और उक्ति स्मरण भऽ आयल अछि।

त्वं सामान्य तरु भ्रमेण सकल
क्षोणी रुह क्षमापतौ
माकन्देऽपि किरात! पातय
मुधा काम्मिन कुठारं हठात
एष श्लाध्यजनस्य जीवित
मलिव्यूहस्य बन्धुर्मधोः
सर्वस्वं कुसुमायुधस्य विजयामान्यः शिकनां गुरुः

—हे किरात! तों सामान्य वृक्ष बूझि सभ वृक्षक राजा आमपर कुठार पात नहि करिहऽ। ई नीक लोकक जीवन, भ्रमरक बन्धु, वसन्तक सर्वस्व, कामदेवक विजय मंत्री, कोइलीक गुरु थीक।

से आम वास्तवमे सभ फलक राजा थीक तथा ओकर एहि महत्व कें केओ अस्वीकार नहि कऽ सकैत अछि। निस्सन्देह आम सदृश आन कोनो फल पृथ्वीपर नहि भेटत।

परन्तु प्रसंग कोन छल और हम कोन धारमे भासि गेलहुँ। तैं त हमर एहि अरसिकताक उपहास कयल जाइत अछि—सखि हे बूझल कान्ह गोआर! हुनक जिज्ञासापूर्ण नयनक भाषा कें हम कहाँ पढ़ि सकलिऐन्ह? तकर की इयह उत्तर छलैक जे हम आमक साहित्यिक विवेचन करय लागी? परन्तु अखन'त कोनो आमक मास छैक नहि जे ..

इहो हमर अरसिकते भेल। एहि सभक लेल केओ एतेक दिनक प्रतीक्षा करैत अछि? परन्तु हम अपना स्व-भाव कें आब कोना बदलू।



छिड़ियैल स्मृति ओ उपरागक स्वर

अकस्मात् निन्न टूटि गेल। खिड़कीक ओहि पार कनैल-वन दिश सँ चूड़ीक खन-खन ओ नारी कंठक कल-कूजन ध्यान आकृष्ट कयलक। आसन्न प्रभातक धूमिल आलोच्छटा मे बूझि पड़ल जे टोल-पड़ोसक नव-विवाहिता तरुणी दल एहि कनैल कुंज पर आक्रमण कऽ देने होथि।

श्रीमतीजी सँ जिज्ञासा कयलियैन्हि! ओ संक्षेपमे उत्तर देलन्हि—एतबहुँ नहि बुझैत छियैक? आ' फेर सूति रहलीह। निन्न हुनका बड़ प्रिय छन्हि ने!

बुझितियैक तऽ फेर पुछबाक कोन प्रयोजन छल? भेल जे हमर मनक भाव ओ नहि बुझि सकलीह। ता' ओहो उठवाक उपक्रम कयलन्हि। अलसायल मुख पर लज्जाक अरुणिमा उमड़ि अयलन्हि। बजलीह—एतेक जल्दी विसरि

गेलियैक ? आइ मधुश्रावणी छैक से नहि मन पड़ल ? गौरी पूजा लेल टटका फूल तोड़ैत जाइत छैक ।

'मधुश्रावणी'—किछु काल धरि सोचैत रहलहुँ । एहि शब्दे मे जेना अतीव आकर्षण हो । अपन 'मधुश्रावणी' मन पड़ि गेल । की तऽ इहो ओहि दिन एहिना उल्लास सँ फूल लोढ़य गेल हैतीह ? ओना तऽ आठ बजे सँ पहिने निन्ने ने टूटैत छन्हि ।

पुछलियैन्ह तऽ उदास भऽ गेलीह—नहि हम कियैक जइतहुँ ? हमरा की हृदय अछि ? हमरा की एहि विवाह सँ प्रसन्नता भेल ? तावत हम मुँह पर हाथ राखि देलियैन्ह ।

नहि जानि एहि तरहें धारावाहिक रूप मे ओ कखन धरि बजैत रहतथि । हुनकर डबडबायल आंखि दिश तकैत कहलियैन्ह—'अहाँ तऽ दुलारो ने बुझैत छियैक ! अहाँ केँ कोना केओ किछु कहत ?"

और पूर्वीय क्षितिज सँ फुटैत लालिमा सदृश हुनका आँखि सँ प्रसन्नताक किरण फूटि पड़ल ।

ओहि मधुश्रावणीक भोर मे कतेक बात मन मे आयल । प्रियवर 'मणिपद्म' जीक एकटा निबन्ध पढ़ने रही । ओ 'हनीमून' शब्दक पर्याय तकैत एहि निष्कर्ष पर पहुँचल छलाह जे मधुश्रावणी सँ विशेष उपयुक्त शब्द एहि लेल दोसर नहि हैतैक । हमरो एहि सँ युक्तिगर दोसर शब्द

नहि भेटैत अछि। वास्तव मे 'हनीमून' शब्दक आत्माक रक्षा जतेक एहि मधुश्रावणी मे होइत छैक ततेक एकर शाब्दिक अनुवाद मे नहि। सद्यः विवाहित दम्पतिक एहि मिलन-आयोजनक निमित्त एहि शब्द केँ गढ़निहार कतेक सरस हृदय छल हैत ?

और एहि प्रसंग मे हमरा नलिनी मन पड़ि गेली तथा अपन भावुकताक प्रवाह मे हम हुनक समस्त कथा केँ लिखि देल अछि। आइ जखन एकरा समाप्त कऽ चुकल छी तऽ रहि-रहि कऽ एकटा बात मन मे उठैत अछि। आखिर एहि कथा केँ पढ़ला उतर नलिनी पर की बिततैन्ह ? कतेक नीक होइत जे हम एहि कथा केँ दोहरबितहुँ नहि।

नलिनी ! अर्थात् एक सर्वसहा, कल्याणमयी नारीक मंजुल मूर्ति !! जनिक जीवनक अश्रु प्रवाह मधुश्रावणीक पृष्ठ-पृष्ठ केँ आर्द्र कयने अछि। देखैत छी तऽ ओह नलिनी आगाँ मे आबि ठाढ़ि छथि —स्वेताम्बरा, उधिआइत केश राशि आ रुग्न मुखमण्डल ! अपन पैघ-पैघ आँखि मे करुणाक असीम जलराशि समेटने। साधारण शिष्टाचारक अनन्तर बैसि गेलीह। थोड़ेकाल मौन रहलीह फेर जखन हम कुशल-समाचार पुछलियैन्ह तऽ जेना हमरा प्रति एक सहज आक्रोश फूटि पड़लन्हि। आखिर मधुश्रावणीक वस्तु-विन्यास मे सभक जीवन केँ वेदनाक भार सँ आकुले बना कऽ कियैक

छोड़ि देल गेल छैक ? सुशीला विधवा भऽ गेलीह। और ताहूसँ जेना सन्तोष नहि भेल हो तऽ ओकरा मारि कमलकेँ दूअर बना देल गेलैक। एही तरहें पद्मसुन्दरी विधवा छलीह ओ हुनक एकमात्र सन्तान नलिनीक भाग्य मे सेहो वैधव्ये लीखि देल गेलैक। नलिनी! जकरा लेल वैधव्यक दारुण पीड़ा सँ मृत्यु केँ वरण करब सरल छलैक, तकरा ओकर कोरक अबोध शिशु ममताक विवशता मे बान्हि देलकै—ओ अबोध शिशु जकर जन्महि एक पितृहीन सन्तानक रूप मे भेलै, आखिर ओकरा अपन पिताक स्नेह सँ वंचित कियैक राखल गेलै ?

एहि तरहक उपराग बड़ मर्मस्पर्शी होइत छैक। परन्तु नियतिक आगू ककर वश चलतैक ? और ओहि नियति केँ जीवनक इतिहास सँ कात कऽ देव की सम्भव छैक ? जे नलिनी मृत्युक एहि विभीषिकाक प्रति अपन आक्रोश व्यक्त कयने बिना नहि रहि सकलीह, ओयह जखन स्थिरचित्तसँ विचार कयने हैतीह तऽ प्रारब्धक प्रबल शक्तिक सम्मुख अपना केँ विवश पौने हैतीह। ई अवश्य जे ओ 'कुसुमादपि सुकुमारी' अपन जीवन संघर्षमे 'वज्रादपि' नहि बनाओल जा सकलीह, परन्तु हुनक आँखिक नोरमे अन्तरक अनुरागकेँ घोरि त्याग ओ साधनाक जे नारी रूप लिखल गेल ओ कोनो अभावग्रस्त ओ शोक संतप्त जीवनक लेल प्रेरणाक अक्षय स्रोत रहत।

नलिनीकें देखि कमलक स्मरण भऽ आयब स्वाभाविक अछि। कमल! जकर स्नेहपूर्ण आकर्षण ओकर यौवनक पुलिन पर अनुरागक हिलकोर उठा देने छल। ओ अपलक, शून्य, नहि तकैत दृष्टिसँ कमलकें ताकने छलीह। कोनो मधुर कल्पनासँ हुनक अंग-अंग पुलकित भऽ गेल छेल। परन्तु कमलक संग नलिनीक विवाह नहि भऽ सकल। होइत कोना? सामाजिक रीति-मर्यादाक उल्लंघन करब एतेक सरल थोड़े होइत छैक? सोचल जे एही कारणेँ शरतचन्द्र अपन उपन्यास सभमे विधवाक प्रेम-प्रणयक एक सँ एक उदात्त चित्र प्रस्तुत करितहुँ ओकर विवाह नहि करौलथिन्ह। तखन मैथिल ब्राह्मण परिवार पर आधारित मधुश्रावणीक वस्तु-विन्यासमे समाजक रूढ़ि-बन्धन कें तोड़ि देबाक जीवट देखायब एक अर्थहीन, उपहासपूर्ण प्रयाससँ अधिक महत्वक नहि होइत।

अन्ततः विनय बाबूक संग नलिनीक विवाह भऽ गेल। हम बूझल जे नलिनीक अन्तर्द्वन्द्वक इति भऽ गेल। फेर बाहनक (कारण जे सामाजिक जीवन मे नलिनी ओ कमलक बीच सैह सम्बन्ध रहल) निष्कलुष हृदयक अभ्युदय भेल, हृदय मन्थनक पश्चात् जेना अमृततत्वक उपलब्धि भेल हो। हुनक विषादक नोर सुखा गेलैन्ह. जीवनमे आह्लादक नव अध्यायक प्रारम्भ भेल।

मुदा कखन? नलिनी बेशीकाल मन मारने नहि रह-

लीह आ' कहलन्हि—जखन हम कमलक सम्पूर्ण स्वत्व कें विनयकृष्ण मे स्थानान्तरित कऽ लेलहुँ।

नलिनीक अभिशापग्रस्त जीवनक इतिहास पर विचार करैत हुनका कुछ उत्तर देबाक हमर इच्छा नहि छल। परन्तु एतेक दिन पर हमरा अपना सम्मुख पाबि जेना ओ अपन जीवनक अभाव-अभियोग कें बिनु प्रकट कयने नहि रहि सकैत छलीह। उपालम्भक स्वर मे बजलीह—"हमर भावनाक बिहाड़ि कें चित्रण करबाकाल अहाँ अन्यमनस्क जकाँ भऽ गेलहुँ। ओहि दिन आनन्दी बाबूक आँगन सँ आबि कमल कें विवाह करबा लेल कहलियैक तखन हमरा मन पर की बीतल रहै तकर अनुमानो अहाँ नहि कय सकलहुँ। मुदा कमल? ओ तऽ हमरा मनक तार-तार कें चिन्हैत छल। ओ विवाह करब स्वीकार नहि कयलक।

"अहाँ बुझैत हैब जे नलिनी आ' कमल कें मिलय नहि देलियैक। कहुना दुनू फराक रहल। आ' अपन परिश्रान्त सफलता सँ प्रसन्न भऽ कपार परक टघरैत स्वेदबिन्दु कें तर्जनी सँ पोछि, अङैठी कयने हैब। फेर मधुश्रावणी'क पाण्डुलिपि कें समेटि टेबुल पर राखि देने हैब। कतेक टा बिडम्बना छैक जे हमर सिरजनहारो नहि चिन्हि सकलाह।

"वस्तुतः कमलक हाथ छविक हाथ मे दय हम कोनो छविक उपकार नहि केलियैक। छवि मे तऽ हम अपन

सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब के आरोपित कऽ चुकल छलहुँ । मोन अछि कमलक देल लाकेट लागल सोनक चेन ! गेह हम छवि कें पहिरा देलियैक । छविक माध्यम सँ हमरा कमल भेटि गेल । आब यदि छवि अर्थात शेफाली कें देखबैक तऽ ओहि मे नलिनीक आकृति आ' नलिनीक छाया भेटत । कमल आ नलिनी एकदम समानार्थक नाम छैक । फेर दुनू फराक कोना भऽ सकैत अछि ? अहाँ तखन एहि सत्य कें कियैक ने स्वीकार कऽ लैत छी जे अहाँक अचेतन मन अनजाने मे हमरा दुनू कें एक प्राण कऽ देने छल । एकर प्रमाण तऽ इयह नाम अछि ।''*

नलिनी तऽ चुप भऽ गेलीह ! परन्तु बुझि पड़ल जेना नारीक ई मर्मोच्छ्वास हमर हृदयक तार-तार के झनझना देलक अछि । हँसियो लागल जे नामक समानताक ई व्याख्या कतेक दम्भपूर्ण अछि । तावत मे शेफाली आबि गेलीह । दुनू आँखि मे एक आह्लादपूर्ण चमक वर्त्तमान छलन्हि । एक अपूर्व दीप्ति मुखमण्डल पर व्याप्त छल । मोन होइत छल जे तकितहि रही । शरीरक स्वर्ण वर्ण दमकि रहल छल । विवाहक पश्चात जेना रूप मे और लावण्यक समावेश भऽ गेल हो ।

*** उद्घृतांश श्रीरामदेवझा लिखित 'नलिनीक पत्र: शैलेन्द्रबाबूक नाम' शीर्षक निबन्ध (वैदेही : जनवरी-१९६०) सँ लेल गेल अछि ।**

नलिनी कहने छलीह जे शेफाली कें देखबैक तऽ ओहिमे नलिनीक आकृति, नलिनीक छाया भेटत। एहि भावनासँ एक बेर नहि अनेक बेर शेफाली कें देखल। ग्रीवामे लटकल वैह लाकेट लागल चेन देखल जे नलिनी हुनका पहिरा देने छलथिन्ह।

अपना दिश एहि तरहें तकैत देखि शेफाली लजा गेलीह। जखन हम कमलक विषयमे पुछलियैन्हि तऽ ओ बिहुँसैत कहलन्हि—"हुनकर केओ छथिन्ह कमला' दी! हुनकहि पत्र आयल छलन्हि। भेंट करय बजौने छलथिन्ह"—देखल जे ई कहैत-कहैत एक ईर्ष्यापूर्ण भाव हुनक आकृति पर उतरि अयलन्हि अछि।

हम कमला कें नहि चिन्हैत होइअन्हि से नहि! कमलक संग हुनक जे आत्मीयता छलन्हि सेहो हमरा नीक जकाँ जानल छल। एहि प्रसंगमे एक घटना मन पड़ि जाइत अछि। एक दिन कमल कें उत्सुकता सँ अपना दिश तकैत देखि कमला पुछने छलथिन्ह—अहाँ अखन धरि विवाह कियैक ने कयल अछि? और एहि प्रस्तावक संग हुनकर आँखिमे लाज भरल उल्लास चमकि उठल छल।

कमल जेना एहि तरहक प्रश्नक अपेक्षा पूर्वाहि कऽ चुकल छला और उत्तर देबा लेल प्रस्तुते छला। बजलाह विवाह करब कोनो आवश्यक छैक,की?

"हँ व्यक्ति-विशेषक लेल और अहाँक लेल तऽ और

बेशी'' —कमला दुष्टतापूर्ण मुस्कानक संग उत्तर देलथिन्ह ।

एहि उपालम्भ सँ कमल किछु अप्रतिभ जेना भऽ उठल छला । सोचि नहि सकल छला जे की उत्तर देल जाय ।

ता' फेर कमला बाजल छलीह—"हम कोनो दोसर भाव सँ नहि कहल अछि । इयह जे अहाँ बड़े भावुक छी और भावुक व्यक्ति केँ एकटा स्नेह सम्बल चाही । बूझल ?"

कमल जकरा अपनापर दोषारोपण बूझि चिन्तित भऽ गेल छला ताहि विषयमे कमलाक सरस उक्ति सूनि बिहुँसि पड़ला । कहलथिन्ह—"भेल जे अनजानमे हमरा सँ कोनो अपराध तऽ ने भऽ गेल, कारण जे हमरा जीवनमे कोनो महिलाक संग एहि तरहेँ रहबाक ई पहिल अवसर थीक ।"

"जे व्यक्ति महिलाक छाया सँ दूर भागय चाहैत अछि ओकरा अवसर भेटतैक कोना ?" —मधुर व्यंग्य सँ भरल मुसकान कमलाक मुखपर झलकि उठल छल ।

"तऽ अहाँक विचार जे हम अपन स्वच्छन्द जीवन केँ बन्धनमे दऽ दी"—कमल परिहासपूर्ण स्वरमे प्रश्न कयने छला ।

"ई एहन बन्धन छैक जे बन्धन होइतहुँ बन्धन नहि छैक । फूल एवं लता सँ कोमल एहि बन्धन केँ हम जीवनक प्रसाधन बुझैत छियैक । कहू जे नहि ?"—कमला ससंकोच मुस्कुराइत बाजल छलीह ।

कमला ओ हुनक पति, काश्मीर यात्रामे कमलक सह-यात्री छलथिन्ह। एक बेर तुषार कन्याक नाम सूनि कमला जिज्ञासा कयलथिन्ह – ई तुषार कन्या के ?

हुनक पति बुझौलथिन्ह-वैह पार्वतीक सखी सहेली लोकनि। कमला कटाक्ष सँ कमल दिश तकैत बजलीह— हमरा ज एकटा भेटैत तऽ हम कमल बाबू संग लगा दितियैक।

कमलाक एहि सरलतासँ कमल केँ बड़ प्रसन्नता भेलन्हि। विभोर होइत बजलाह—'नहि जानि, अहाँ हमरा विषय मे की सोचि लेल अछि ? परन्तु एतेक धरि निश्चित जे हमरा लेल कामदेव केँ अपन बलि नहि देमय पड़तन्हि।"

कमला आँखि मूनि दुनू हाथ जोड़ि नंगा पर्वत दिश घूमि ठाढ़ि भऽ गेलीह और पुनः बजलीह "हे तुषार कन्ये ! अहाँ धन्य थिकहुँ जनिक नामे सुनि कमल बाबूक हृदय ग्लेसियर जेकाँ पघिलय लागल।'

एही कमला देवी सँ शेफाली केँ ईर्ष्या भऽ रहल छलन्हि। परन्तु नलिनी जेना अन्तर्मन सँ विभोर छलीह। कमलक प्रति शेफालीक अकृत्रिम अनुराग हुनका नीक लागि रहल छलन्हि। कहियो शेफाली रवीन्द्रनाथक पद गाबि कऽ सुनौने छलथिन्ह। एकटा पंक्ति छलैक - सखी रे साजाबो सखार प्रेमे ! और इयह नलिनीक हृदय एकमात्र कामना बनि गेल

छथन्हि। शेफाली कें कमलक प्रेम सँ सजा कय नलिनी जेना अपन एही मनोकामना कें पूर्ण कयने छलीह ।

हठात मन मे ई भाव उदित भेल जे ठीके छविक माध्यम सँ नलिनी कें कमल भेटि गेलन्हि ? परन्तु एहि समर्पणक पाँछाँ कतेक पैघ त्याग छल ? स्वयं के 'सकरुण विरह वेदना' सँ सजा कऽ आनक श्रृंगार रचायब कतेक मार्मिक अछि ।

लक्ष्मणक शाप

चकबा ओ चकबो....

दुनू में राति भरिक बिछोह। कतेक हृदयद्रावक अछि ई विषय। दिन भरि संग रहनिहार जोड़ी कें भरि राति एक दोसरा सँ फराक रहय पड़ैत छैक।

भोर हैवा लेल अछि। प्रातीक स्वर सँ निन्न टूटि गेल अछि। दौनिवाहक स्वर थिक ई। दाओनक बरदक गर-दनिक घंटी टुन टुना रहल अछि ....

भोर होइतहि बिछुड़ल जोड़ीमे फेर मिलन हैत चकबा ओ चकबी।

परन्तु फेर त राति होइतहि दूनू कें पृथक भऽ जाय पड़तैक ? के देलक अछि ई कष्ट एकरा ? ककर शापक फल भोगय पड़ैत छैक एहि दूनू कें ?

लक्ष्मणक शाप थिक ई।

लोककवि अधिक काल धरि गुप्त नहि राखि सकल लक्ष्मणक कठोरता कें। क्षणहिमे क्रोधित भऽ जैब त लक्ष्मणक स्वभावे छलन्हि। चकबा ओ चकबीक ई बिछोह जखन कवि कें असह्य भऽ उठल तऽ ओकर स्वर फूटि पड़ल—

'अपन पंचवटी निवासमे राम-लक्ष्मण पोखरि खुनौलन्हि। ओकर चारू भर घाट मढ़ौलन्हि। ओहि पोखरिमे चकबा-चकबी आबिकऽ अपन डेरा देलक। एही पंचवटी सँ सीताक हरण भऽ गेल। सीताक वियोग सँ रामक अत्यन्त करुण दशा भऽ गेलन्हि। जीवन व्यर्थ बुझि पड़य लगलन्हि।

सभ सँ सीताक विषयमे पूछल गेल। केओ कथी लै किछु कहत! अन्तमे लक्ष्मण चकबा सँ जिज्ञासा कलथिन्ह रे चकबा! आब तोरा पूछैत छियौक। कह जे तों ओहि सती-साध्वी कें देखलैंह अछि? की तों जानैत छौं जे कोन बाटें सीता कें हरि कऽ लऽ गेल?

चकबा बाजल—हे लक्ष्मण! हम त जल-थलमे रहि कऽ घोंघा, सेमार खाइत छी। फेर क्षणमे आकाशमे उड़य लगैत छी। हम सीताक हरण होइत नहि देखलिअ अछि।

परन्तु आश्चर्यक विषय—चकबा पुनः बाजल—तोरा दूनू भाइक एहन जोड़ो आ' तखन सीता सन सुन्दरि नारि कें नहि भोगि सकलाह आ हुनकर हरण भऽ गेल।

लक्ष्मण घूरि कऽ राम दिश तकलन्हि । फेर बजलाह—भइया ! ई पक्षी अप्रिय बात कहलक अछि । हुकुम दी तऽ एकरा वाण सँ वेधि दी ।

परन्तु राम मना कऽ देलथिन्ह । कहलथिन्ह—एहि पंछी केँ भारला सँ पुण्य नहि हैत । दोसर कमलदहो त एकरा बिना सुन्न लागत ।

तथापि रामक बुझौलो सँ लक्ष्मण शान्त नहि भेलाह । मनक उत्ताप शापमे परिणत भऽ गेलन्हि । चकबा केँ कहलथिन्ह—रे चकबा ! तोरा अपन जोड़ी पर बड़ गर्व छौक । जो, दिने भरि दुनू एकसंगे रहबें । राति होइतहि दुनू फराक भऽ गेल करबें ।''

से चकबा ओ चकबी तहिया सँ रातिमे एक संग नहि रहय पबैछ । लक्ष्मणक शाप जे अछि । पृथक भय रहय पड़ैत अछि दुनू केँ... ....

गीतक पंक्ति रात्रिक निस्तब्धता केँ चीरि प्रतिध्वनित भऽ रहल छल—

छोट मोट पोखरा हौ लछुमन ! मढ़ौलह जे चारू घाट ।
ओहिमे देलकऽ हौ लछुमन ! चकबा चकबी निज बास ॥
जगबा कठिन भेलै हो रामा सिया रानी हरनमा ॥
हम तोरा पुछियो रे चकबा ! कह-कह सतीक समाद ।

कोन बाटें हरलक रे चकबा ! सिया सन सुन्दर नारि ।।
जगबा कठिन भेलै हो रामा सियारानी हरनमा ।।
हमहूँ जे जल-थल हो लछुमन ! खाइ छी घोंघा-सेमार ।
छनमे लागइ छी हो लछुमन उड़ि-उड़ि उपरे आकाश ।।
हम नहि देखलिअऽ हो लछुमन सिया हरने जाइ ।
जगबा कठिन भेलै हो रामा सियारानी हरनमा ।।
आ दुनू जे भइया हो लछुमन ! जोड़िया समतूल ।
भोगियो ने भेलह हो लछुमन ! सिया सन सुन्दरि नारि ।।
जगबा कठिन भेलै हो रामा सियारानी हरनमा ।।
पंछी के जतिया हो दादाजी, बोलिया बोललै कुबोल ।
हुकुमा जं दितऽ हो दादाजी बेधितहुँ वान चलाय ।।
जगबा कठिन भेलै हो रामा सियारानी हरनमा ।।
पंछी कें मारने हो लछुमन ! नहि हेतै कोनो पुन्न ।
आ चकबा कें मारने हो लछुमन ! कमलदह हैतै सुन्न ।।
जगबा कठिन भेलै हो रामा सियारानी हरनमा ।।
भरि दिन जे रहतौ रे चकबा ! धनि लागि सुख-सहवास ।
साँझ पड़ैत रे चकबा ! तोहरो तिरिया विरोग ।।
जगबा कठिन भेलै हो रामा सियारानी हरनमा ।।

सोचय लगलहुँ जे रामक कथा लोककवि कें कम प्रभावित नहि कैलक अछि। एहि महत् चरित्र कें अपनाकय

महाकाव्य प्रणयन भेल अछि से ठीक, परन्तु लोकगीतोक माध्यमसँ एकर परम्परा वर्तमान अछि। कविक भावुकताक सभसँ पैघ परिचय त इयह कहल जाइछ जे ओ आख्यानक मार्मिक स्थल केँ चिन्हि सकल अछि वा नहि? एहि दृष्टिसँ जखन प्रस्तुत लोकगीतक विषयमे सोचैत छी त एहि अज्ञात लोककविक भावुकताक बिनु सराहना कैने नहि रहल जाइत अछि। सीताहरण रामकथाक एक मार्मिक प्रसंग अछि और प्रस्तुत गीतमे एहिकेँ चकबा-चकबीक कथासँ संयोजित कय विशेष मार्मिक बना देल गेल अछि। लोकगीत त हृदयक बोल थीक—हृदय ओहिमे फूटि पड़ैत अछि, सहृदयता उमड़ि उठैत अछि। ई त लोक मानसक उर्वरताक प्रतीक होइछ। तखनहि त ई गीत एतेक हृदयस्पर्शी भेल अछि।

जाय दिअ एहि बात सभकेँ। गीत कखन ने खतम भऽ गेलै और रातियो बीति गेल। ओम्हर पूव दिश आकाशमे लालिमा फूटि रहल अछि। भोर भऽ गेल। आब चकबा-चकबी दुनूक मिलन भऽ रहल हैत

परन्तु राति होइतहि फेर दुनूकेँ फराक भऽ जाय पड़तै। कहिया धरि रहत लक्ष्मणक ई शाप?

कतेक दिन ने भऽ गेल हमरो गामसँ अयला। बाबूजी घरसँ दूर कौशर झीलक कातमे बसल एहि छोट बस्तीमे

किछु जमीन छोड़ि गेलाह। हुनक मृत्युक बादसँ हमरहि आबय पड़ैत अछि एतय—शीलोच्छवृत्तिमे। किछु दिनक ई एकान्तवास सालभरिक अन्न संकटसँ मुक्त रखैत अछि।

जल्दी धान तैयार भऽ जाइत त गाम जइतहुँ।

जयबे करब की, मनकेँ बुझबैत छी—आखिर हमरा पर थोड़े कोनो लक्ष्मणक शाप अछि।

पथ हेरथि राधा

प्रकृति दर्शनमे दैनिक जीवनक रुक्षताकेँ बिसरबाक अद्भुत शक्ति छैक। प्रस्तुत यात्राक प्रसंग एकर नीक जेकाँ अनुभव भेल अछि। नैसर्गिक शोभाक एहि अक्षय निर्झर लग बैसि जेना एक अपूर्व तृप्तिक बोध होइत अछि।

भरि दिन तऽ प्रकृति-सौन्दर्यक पर्यवेक्षणमे बितैत अछि। सन्ध्या होइतहि अपन "रैन-बसेरा"मे घूरि अबैत छी। सप्ताह पूरि रहल अछि श्रीनगर अयला। एही सात दिनक अभ्यन्तर जेना एहि 'हाउस-बोट सँ अतिशय आत्मीयता भऽ गेल अछि।

एहि 'हाउस-बोट'केँ पसिन्न करबामे भावुकताक बड़ जोर छल। टाकाक प्रश्न सभ स्थितिमे उपस्थित भऽ जाइत छैक। से एहू 'हाउस-बोट'क लेल बेश मोल-मोलाइ करय पड़ल। हमरो अपन जिद्द छल आ' 'हाउस-बोट' बला तऽ सहजहि अपना जिद्द पर छल। किछु स्थिरे नहि भऽ रहल छल।

एहीं बीच केओ 'हाउस-बोट' बलाकें शोर कैलकै। हम सभ 'हाउस बोट'क छत पर रही। नीचा झुकि कऽ देखल जे डलझीलमे एक अद्भुत कान्तिमयी रमणी 'शिकारा'मे बैसलि अछि। ओ थोड़े काल धरि 'सुभाना'सँ गप्प कयलक और फेर नाव खेबैत चलि गेलि। हमर ध्यान तखनहुँ ओम्हरहि छल। पश्चात ध्यान आकृष्ट करैत सुभाना कहलक—ई हमर बहिन छलि।

फेर किराया स्थिर करेबामे बेशी मोल-जोल नहि भेल। हमर मित्र सुभानाक कहल किराया मानि लेलथिन्ह। तखन हमरा लेल ओकरा स्वीकार करबाक अतिरिक्त रहल की? डलझीलक ओ शिकारा-वाहिनी हमर मित्रक मन मोहि लेने छलन्हि। अपन मित्रक एहि सहज भावुकता पर हम मुस्का कऽ रहि गेलहुँ।

एकरा हम अपन मित्रक स्वभावक दुबलता कदापि नहि कहब। सौन्दर्यक सम्मुख बिनत हैब तऽ प्रत्येक सहृदयक स्वभाव छैक।

'हाउस-बोट'मे अयला उत्तर एहि सुन्दरी 'यासमिनकें' अनेक बेर देखल अछि। अनेक बेर की रोज देखत छी। ओकर सौन्दर्य अतिशय प्रभावित कयलक अछि। हमरा सभ लेल चायसँ लऽ कऽ भोजन बनेबा धरिक भार ओकरे जिम्मा छैक। हमर मित्रक तऽ विश्वास छन्हि जे भोजन तैं एतेक स्वादिष्ट बनैत अछि।

सौन्दर्यक विषयमे हमर निजी धारणा अछि। हम पैघ-पैघ आँखियेकेँ सौन्दर्यक प्रतिमान मानैत छी। पैघ पैघ आँखिक कल्पना करितहि नहि कहि कोना कोनो रूपमतीक आँखि झलकि उठैत अछि—पैघ-पैघ ओ कारी आँखि! कान धरि पसरल, अपन नैसर्गिक चारुतासँ बरबस मुग्धकारी।

साहित्यक अनेक पृष्ठ अपनहि आँखिक आगू पसरि जाइत अछि। वयःसन्धिक देहरिपर ठाढ़ि एक तरुणीमूर्त्तिकेँ देखि रहल छी—हुनक पैघ-पैघ आँखिकेँ देखि रहल छी। ई नयन अनजानहि कटाक्ष करब सीखि लेलक अछि—एक नव चंचलता समा गेल अछि एहिमे। एहन ओहन नहि—चरणक चंचलता जेना आँखिमे समा गेल हो।

गुलाबक कोंढ़ीकेँ फुलेबामे कतबा समय लगैत छैक? आमकेँ मजरबामे ओ फलयुक्त हैबामे कतेक दिनक व्यवधान छैक? द्वितियाक चन्द्रमा देखितहि पूर्णिमाक आभासँ युक्त भऽ जाइत अछि। शुक्ल पक्षक पन्द्रहम तिथिकऽ चन्द्रमा पूर्ण होइत अछि, तहिना जीवनक पन्द्रहम वर्षमे तरुणी, युवती बनि जाइत अछि। वयःसन्धिक देहरिकेँ टपि ओ यौवनक राजगृहमे प्रवेश करैत अछि। ओकर उत्सुकतापूर्ण नेत्र नव निखारक संग झलकि उठैत अछि। एकरा भ्रमर, मृग-नेत्र,

कमल-पत्र, मत्स्य, खंजन, मेघ, चकोर जे जीमे आबय कहि सकैत छिऐक। ई भ्रमर थीक जे मुख-कमलक मधुपान कय उड़बामे असमर्थ अछि। एकर चांचल्यक आगाँ खंजन पक्षीक कोनो मूल्य नहि। एकर सौन्दर्यक तुलनामे कमल-सुमन सेहो हीनताक अनुभव करैत अछि। और स्नान कयला उत्तार ई आँखि सिन्दूर मंडित कमल-पत्र सदृश अनुपम चारुता प्रकट करैत अछि।

परन्तु एहि आँखिमे जखन काजर रचि देल जाइत अछि तऽ ओकर माहात्म्य औरो बढ़ि जाइत अछि। कामदेव 'पंच-वाण छथि। से मदन अपन तीनटा वाण त तीनू लोकमे छोड़लन्हि आ' शेष हुनक दू टा वाण जे रहलन्हि तकरा विधाता निष्ठुरतापूर्वक, रसिक लोकनिक हत्या करबा लेल सुन्दरीक दुनू नयनकें सौंपि देलथिन्ह।

सुन्दर आँखिक सौन्दर्यक विषयमे की कहल जाय। पुरैनक पातक हरियर परिधानक बीच जखन कमल-कली फुलाइत अछि तऽ मधु-प्रेमी भ्रमरक समूह स्वतः आकर्षित होमय लगैत अछि। रूप-ज्योत्नासँ स्निग्ध चकोर दृष्टि बरबस मुखचन्द्र दिश आकृष्ट होइत अछि। फेर भौंह द्वारा सुचित्रित आँखि कोनो प्रेमीक मनकें लोभा लैत अछि और सुहागक नव संसार बसि जाइत अछि।

हमरा एहने समय मे एक लोकगीतक कतिपय पंक्ति स्मरण भऽ अबैत अछि—

चाँद बइरि भेल बादल
मछरि बइरि महाजाल
तिरिया बइरि दुहू लोचन !

से 'यासमिन'क आँखिक सौन्दर्य के देखि निश्चय मुग्ध भऽ गेलहुँ अछि। एतेक सुन्दर भावुक नेत्र...... एना लगैत अछि जे काश्मीर घाटीक एकाकीपन मे पनगय बला द्रुम-लताक प्रगाढ़ श्याम-स्निग्धता एहि दीर्घ लोचन मे सुप्त अछि।

आँखिक विषय मे कवि रवीन्द्रनाथ अपन एक गल्प मे लिखने छथि — "जखन हम शब्द मे अपन विचार व्यक्त करैत छी तऽ सरलता सँ माध्यम नहि भेटैत अछि। एहन स्थिति मे अनुवादक प्रक्रिया हैबाक चाही जे कि बहुधा अनुपयुक्त भेल करैत अछि। और तखन हम भ्रान्ति मे पड़ि गेल करैत छी। परन्तु कारी आँखि कें अनुवाद करबाक प्रयोजन नहि होइत अछि; मस्तिष्क स्वतः ओहि पर अपन छाया दान करैत अछि। ओहि मे विचार प्रकट ओ विलीन होइत अछि; कखनो कऽ चमकि उठैत अछि और कखनो अन्धकार मे डूबि जाइत अछि। ओ अस्ताचलगामी चन्द्रमा सदृश अचल बनल रहैत अछि अथवा तीक्ष्ण एवं चञ्चल विद्युत रेखा सदृश समस्त

आकाश कें आलोकित कऽ दैत अछि।'' कवि रवीन्द्रनाथ आँखिक एहि महिमाक बखान करैत ओकर भाषा कें अभि-व्यक्ति मे असीम, समुद्र सदृश गम्भीर, स्वर्ग सन स्वच्छ' कहलन्हि अछि जाहि मे 'सूर्योदय ओ सूर्यास्त, ज्योति ओ अन्धकार' खेलायल करैत अछि। यासमिन क आँखिक प्रसंग ई उक्ति बहुत किछु चरितार्थ होइत अछि।

सुभाना एहि बीच मे यासमिनक विषय मे कतेक बात कहल अछि। घोर सम्प्रदायवादी ओकर पति जहिया सँ युद्धस्थगन रेखाक ओहि पार भागि गेलैक अछि तहिया सँ ई परित्यक्ताक जीवन बिता रहल अछि। सुभाना कतेको बेर दोसर विवाह कऽ लेबाक प्रस्ताव केलकै परन्तु से ओकरा स्वीकार नहि भेलै। अपना आँखिमे जेना प्रेमक महती कविता सजौने ओ एखनहुँ ओकर प्रतीक्षा कऽ रहल अछि। ओकर जीवनक करुणा ओकर सौंदर्य के द्विगुणित कऽ रहल छैक।

जनिका लोकनिक मन मे प्रेमक अक्षय उत्स छन्हि ओ अनायास उमड़ि कऽ दोसरो कें संक्रमित कऽ दैत अछि। ताहि सँ हम अनेक बेर यासमनिक आँखि मे संचित ओहि महती प्रेम कविता कें पढ़बाक प्रयास कयलहुँ अछि। भोर मे जखन ओ चाय लऽ कऽ अबैत अछि तऽ एना लगैत अछि जे ओकर पैघ-पैघ आँखिक अनुरागे घोरा कऽ ओकर रंग ओ मिठास बनि गेलैक अछि।

और जखन हम ओकरा 'हाउस-बोट'क एक कात मे ठाढ़ि भेल निर्लिप्त भावे शून्य मे तकैत देखैत छिऐक तऽ ओहि प्रेम-कविताक सहज लावण्य अनायास सुस्पष्ट भऽ जाइत अछि। ओहि आँखि मे अनुराग छैक, आनन्द छैक, विभोरता छैक, वासना छैक, माधुर्य्य छैक, अमर प्रतीक्षाक दुरूहता छैक तथा प्राप्ति कें असीम बना कऽ दूरहि सं देखि लेबाक क्षमता छैक। निस्सन्देह कारी आँखि कें अनुवाद करबाक प्रयोजन नहि होइत छैक।

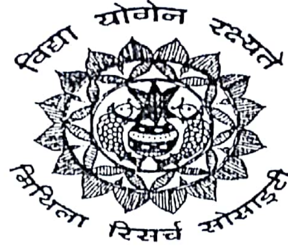
साहित्यक पृष्ट पुनः स्वतः खुजि जाइत अछि। श्याम-सुन्दरक मार्ग पर आर्त्त भेल टकटकी लगौने आँखि देखैत छी। ज्योत्सना प्लावित यामिनी मे मिलन उत्कण्ठा सं परिपूरित नजरिक झलक भेटैत अछि और फेर निष्ठुर प्रियतमक रूप दर्शन सं मनक साध मेटेबाक बदला निराशाक परित्ताप पबैत छी।

और यासमिक निराशाक एहि कुहेश मे आशाक दीप लेसने ठाढ़ि अछि। ओकर आँखिये मे जेना ओकर हृदय प्रतिबिम्बित छैक। कविक विरह काव्य जेना मूर्त्तिमान भऽ उठल अछि—'एसकरि ठाढ़ि कदम तर रे पथ हेरथि मुरारि!'

कृष्णक प्रतीक्षा मे ठाढ़ि राधा! राधा अर्थात् वियोगिनी नारीक सर्वोत्तम अधिष्ठान!! की ई राधा चिरन्तन छथि जे

अपन परदेशी प्रियतमक निष्ठुर आघात सँ मर्माहत भेलि निरन्तर बाट जोहि रहल छथि—'लोचन धाय फेधायल हरि नहि आयल रे!' प्रायः जतय विरह-व्यथा नहि अछि ओहि ठाम सरल हृदयक दुर्ललित प्रेमो नहि अछि। नोरेक धार मे जेना जीवन तरंगित होइत हो, पीड़े मे जेना प्रेम पनगैत हो।

ध्यान जाइत अछि सुदूर देहात मे आंगनक टाट लग ठाढ़ि उत्सुकता सँ बाट दिश तकैत एक नारी मूर्त्ति दिशि। सोचैत छी—रातिक निबिड़ अन्धकार मे सड़क सँ जाइत रिक्शाक टुन-टुन शब्द सँ ओ कोना चेहा कऽ जागि जाइत हैतीह। फेर वैह नीरवता, वैह अवसाद और वैह "आस अरुझायल" जीवन।



मिथिला रिसर्च सोसाइटी

लहेरियासराय, दरभंगा

देसिल बयना सब जन मिट्ठा
ते तैसन जम्पओ अवहट्ठा

(Mahakavi Vidyapati)

Mithila Research Society has undertaken initiative of digitalization of rare and classical literary and research works in Maithili for readers and researchers. This is purely an attempt to preserve and popularize great works in Maithili for present and future generations to know their rich literary treasures. Art and literature shape a civilization. Mithila a cradle of learning has a glorious literary tradition right from Jyotirishwar Thakur and Mahakavi Vidyapati (medieval age) to Chanda Jha (pre independence era) to modern age represented by legends like Pandit Surendra Jha Suman and Pandit Chandranath Mishra Amar. Acclaimed Maithili author and researcher Dr Ramdeo Jha has been kind enough to allow access to his rich personal library for digitalization.

There is an exhaustive list of author, poet, playwright, critic and likes who chiseled Maithili literature into a great mosaic. Contribution of legends like Abhinav Vidyapati Bhavpritanand Ojha, Pandit Surendra Jha Suman, Kashikant Mishra Madhup, Kanchinath Jha 'Kiran', Ramcharitra Pandey 'Anu', Radhakrishna 'Baher', Yadunath Jha 'Yaduvar', Chhedi Jha 'Madhup', Pulkit Laldas 'Madhur', Deenbandhu Jha, Janardan Jha 'Jansidan', Murlidhar Jha, Jeevan Jha, Kavivar Sitaram Jha, Upendranath Jha' Vyas' Mahamahopadhyaya Umesh Mishra, Harinandan Thakur 'Saroj', Jagdishwari Prasad Ojha, Umapati Tiwari, Mahamahopadhyaya Madhusudan Ojha, Dr Sir Ganganath Jha, Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha, Mahamahopadhyaya Mukund Jha Bakshi, Ayodhyay Prasad Khatri, Nayayacharya Anand Jha, Umanath Jha, Tantranath Jha, Munshi Raghunandan Das, Ramdeo Srivastava, Sahdeo Srivastava, Bindeshwar Mandal, Jagdish Prasad Karna, Girindra Mohan Mishra, Brajnandan Thakur, Kalikumar Das, Subhadra Jha, Harimohan Jha,

Babu Bholalal Das, Dinanath Pathak, 'Bandhu', Shailendra Mohan Jha, Babuaji Jha Ajnat, Ramanath Jha, Fazul Rahman Hashmi, Ishnath Jha, Mayanand Mishra, Chandrabhanu Singh, RC Prasad Singh, Ramdeo Bhabuk, Dr Ramdeo Jha, Jaikant Mishra, Krishnakant Mishra, Pandit Chandranath Mishra Amar, Pandit Govind Jha, Dr. Ramdeo Jha, Ramkishore Jha 'Vibhakar', Dr Ratneshwar Mishra, Ravindranath Thakur, and other can't be forgotten. They dedicated their life to enrich Maithili literature with their outstanding literary creations. Many died unsung despite producing some of the best literary works and sadly they were forgotten. They selflessly devoted their life to serve Mithila and Maithili and bestowed upon us a rich heritage.

It was widely felt that books in Maithili are not widely available despite their huge demand by readers. Even outstanding literary works became rare due to lack of reprint.

Mithila Research Society is trying to bridge the gap by collecting and converting them in digital form. Mithila Research Society clarifies that this is purely a non-commercial undertaking hence any commercial use of the books is prohibited.

Mithila Research Society was established in 1905 by great poet Chanda Jha along with others. The organization was named as (Mithila Tatva Vimarshini (Mithila Research Society) to promote and preserve culture and literature of Mithila and Maithili besides promotion of teaching and learning of Sanskrit and Maithili, research and printing of popular texts of Mithila, research and publication of books related to history of Mithila

Pandit Chetnath Jha, Babu KC Mishra, Mukund Jha Bakshi, Pandit Gannath Jha, Munshi Raghunandan Das and Babu Tulapati Singh were on forefront along with Chanda Jha. Mahamahopadhyaya Parmeshwar Jha had written history of Mithila named as Mithila Tatva Vimarsha on request of Mithila Research Society. But the organization despite abundance of energy an dedication and hundreds of scholars deeply involved with the activity of the association could not flourish due to lack of desired support from society to an extent that people started calling Mithila Research Society as Murda Club; a dead organisation. That was a huge loss for Mithila.

But this was revived around year 1965 by Dr Ramdeo Jha under guidance of his senior Shailendra Mohan Jha. So far by the mid of year 2018 Mithila Research Society published over 150 books of Maithili literature and regularly undertakes activities for promotion of Maithili. Dr Ramdeo Jha is heading this institution assisted by Shankardeo Jha.

Vijay Deo Jha
9470369195, 8877213104 vijaydeojha@gmail.com

॥ श्री ॥



॥ विज्ञापन ॥



मिथिलारिसर्चसोसाइटी

सम्यगुद्योगशीलस्य सहायः स्वयमीश्वरः ।

१ दरभङ्गामें एक सभा 'मिथिला रिसर्च सोसाइटी' (मिथिला तत्व विमर्षिणी) नामक लग भग डेढ़ वर्ष सँ अछि । (१) संस्कृत विद्याक पठन पाठन बढ़ायब; (२) मैथिल वा अन्यकृत ग्रन्थ जे मिथिलामें प्रचलित अछि तकर अन्वेषण ओ मुद्रित करब; मिथिला देश ओ मैथिल विद्वान ओ अन्य विशिष्ट लोकनिक यथार्थ इतिहास लिखब; (४) मिथिलाक ऐतिहासिक स्थान ओ वस्तुसभक अन्वेषण ओ यथा साध्य जीर्णोद्धारक चेष्टा करब, (५) देशाचारानुसार आओर आओरो विषयक उन्नति करब, उक्तसभाक उद्देश्य छैक । एकर निर्वाह सकल साधारणक सहाय व्यतिरेक सम्भव नहिं । रिसर्च सोसाइटीक प्रार्थना जे मैथिलभ्रातृगण स्वोन्नतिमें प्रवृत्त होथि, परस्पर सहायता करथि, उपसभा नियुक्त कय रिसर्च सोसाइटीक साहिय करथि ।

२ एहि वर्ष इहो विचार भेलअछिजे एहिं सभाक द्वारा निरीक्षण पूर्वक प्राचीन दुर्लभपुस्तक मुद्रित कयलजाय । एक दुइ व्यक्ति अपना अपना द्रव्यसँ पुस्तक छपयवापर उद्यतछथि। ओ एहिसभाक द्वारा छपाओलजायत । परन्तु एक दुइ व्यक्तिक साध्य एहनभारी कार्य नहिं, एकर तीनि उपाय छैक—

(१) श्रीमान् लोकनि द्रव्यक सहायता करथि, ताहि द्रव्यें उक्तसभाक द्वारा पुस्तक छपाओलजाय, एहि पुस्तक पर स्वत्व मिथिला रिसर्च सोसाइटीक रहैक पुस्तक विक्रय हो, तल्लब्ध द्रव्य मिथिला देशक उपकारार्थ व्यय हो । (२) अथवा श्रीमान् लोकनि अपना द्रव्यें एहि सभाक द्वारा पुस्तक छपावथि, सभाक दिशसँ प्राचीन दुर्लभ पुस्तक एकत्र कयल जाय, गृहीत पुस्तकक प्रूफ देखल जाय ओ मुद्रण कयल जाय । एहि परिश्रमक बदलामें दशांश मुद्रित पुस्तक अथवा उचित द्रव्य एहि सोसाइटीकें उक्त श्रीमान देथिन्ह। (३) अथवा जे कोनो पुस्तक रिसर्च सोसाइटीक दिशसँ छपय तकर ग्राहकरूपें उक्त सोसाइटीक सहायता श्रीमान् लोकनि करथि, समुचित द्रव्य दय पुस्तक खरीद करथि ।

३ रिसर्च सोसाइटीक संरक्षक विविध विरुदावली विराजमान मानोन्नत महाराजाधिराज श्रीमान् मिथिलेश तथा श्रीमान् बाबू शारदाचरण मित्र जज कलकत्ता हाइकोर्ट,—छथि । ओ दरभङ्गाक कलेक्टर साहबसँ प्रार्थना कयलगेल अछि जे ओ सभापति होथि । बाबू श्रीतुलापतिसिंह, बाबू श्री विन्ध्यनाथ झा बी० ए०, बाबू श्री गङ्गानाथझा ऐम० ए०, बाबू श्री विन्ध्येश्वरीप्रसादसिंहजी, श्री काली बाबू डाक्टर, महामहोपाध्याय पं० श्री चित्रधर मिश्र, कवीश्वर पण्डित श्रीचन्द्र झा, वैयाकरण केसरी पं० श्री परमेश्वर झा इत्यादि सभासद्गणमें सँ छथि ।

४ रिसर्च सोसाइटीक मेम्बर हयबाक निमित्त फीस एक रुपैया नियत कयलगेल अछि ।

५ उक्त विषय सम्बन्ध में जाहि महाशय कें पत्राचार करबाक होइन्ह से निम्न लिखित सेक्रेटरी सँ करथि ।

दरभङ्गा
अगस्त १९०६

श्री केशी मिश्र बी० ए०
सेक्रेटरी मिथिलारिसर्चसोसाइटी
दरभंगा ।